Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَطِیۡعُوا اللّٰہَ وَالرَّسُوۡلَ لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ○

(सूरत आले-इम्रान आयत :132)

अनुवाद: और अल्लाह और रसूल की इताअत करों ताकि तुम पर रहम किया जाए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 36

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

5 मुहर्रम 1441 हिजरी कमरी 5 तबूक 1397 हिजरी शमसी 5 सितम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

क़ुरआन शरीफ़ ऐसी हिक्मतों और मआरिफ़ का सार है व्यर्थ और बकवास का ज़ख़ीरा उस के अंदर नहीं। हर एक चीज़ की तफ़सीर वह ख़ुद करता है और हर एक किस्म की जरूरतों का सामान उस के अंदर मौजूद है। वह हर पहलू से निशान और दलील है। अगर कोई इनकार करे तो हम हर पहलू से इस का एजाज़ साबित करने और दिखलाने को तैयार हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी लिए हर एक किस्म के ख़वारिक़ और चमत्कार प्राप्त थे। हम उनकी शान क्या वर्णन करें। जिस तरफ़ देखो असंख्य चमत्कार मिलेंगे। प्रत्येक तीन प्रकार के चमत्कार मजमूई तौर पर आप ही का हिस्सा थे। ज़ाहिरी निशान जैसे चान्द का फटना और अन्य चमत्कार के जिनकी गिनती तीन हज़ार से भी ज़्यादा है। और मआरिफ़ और हक़ायक़ के चमत्कार से तो क़ुरआन करीम परिपूर्ण है और वह हर वक़्त ताज़ा और नए हैं। अख़लाक़ के चमत्कार के लिहाज़ा से ख़ुद इस मुक़द्दस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ (अल्कलम 5) है । क़ुरआन करीम अने चमत्कार के प्रमाण में وَاِنۡ کُنۡتُمۡ فِیۡ رَیۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰی عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَۃٍ مِّنۡ مِّثۡلِہٖ (अल्बकरह: 24)कहता है ये चमत्कार रूहानी हैं। जिस तरह वहदानीयत की दलीलें दी हैं इसी तरह पर हिक्मत, फ़साहत , बलाग़त भी इन्सान उस की तरह बनाने पर क़ादिर नहीं। दूसरे स्थान पर फ़रमाया لَئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِہٖ :(बनी इस्राईल 89)

क़ुरआन मजीद की फ़साहत तथा बलाग़त

अत: रुहानी चमत्कार में कोई यह ख़्याल ना कर ले कि यह मुसलमानों की कल्पना और ख़्याल है। आजकल के नास्तिक नहीं बल्कि जो नास्तिक नहीं हैं वे यह नहीं मानते कि क़ुरआन का मोजिज़ा है। सय्यद अहमद ने भी ठोकर खाई है और वह उस की फ़साहत बलाग़त को मोजिज़ा नहीं मानता। जब हम याद करते हैं तो हमको अफ़सोस होता है कि सय्यद अहमद ने चमत्कार से इनकार किया है। सय्यद साहिब किसी तौर से मोजिज़ा नहीं मान सकता। क्योंकि वह कहते हैं कि एक मामूली दर्जा का आदमी या उच्च दर्जा का आदमी भी नज़ीर बना सकता है मगर अफ़सोस तो यह है कि वह इतना नहीं जानते कि क़ुरआन लाने वाला वो शान रखता है कि صُحُفًا مُّطَہَّرَۃً فِیۡہَا کُتُبٌ قَیِّمَۃٌ (अल्बय्यनह: 3,4) ऐसी किताब जिसमें सारी किताबें और सारी सच्चाइयां मौजूद हैं। किताब से मुराद और आम मफ़हूम वे उम्दा बातें हैं जो कुदरती रूप से इंसान अनुकरण के योग्य समझता है।

क़ुरआन मजीद की सार गर्भिता

क़ुरआन शरीफ़ ऐसी हिक्मतों और मआरिफ़ का सार है व्यर्थ और बकवास का ज़ख़ीरा उस के अंदर नहीं। हर एक चीज़ की तफ़सीर वह ख़ुद करता है और हर एक किस्म की जरूरतों का सामान उस के अंदर मौजूद है। वह हर पहलू से निशान और दलील है। अगर कोई इनकार करे तो हम हर पहलू से इस का एजाज़ साबित करने और दिखलाने को तैयार हैं। आजकल तौहीद और हस्ती इलाही पर बहुत ज़ोरदार हमले हो रहे हैं। ईसाईयों ने भी बहुत कुछ ज़ोर मारा और लिखा लेकिन जो कुछ कहा और लिखा वह इस्लाम के ख़ुदा के बारे में लिखा है। ना कि एक मुर्दा सलीब दिया गया और असमर्थ ख़ुदा के बारे में। हम दावे से कहते हैं कि जो आदमी अल्लाह तआला की हस्ती और वजूद पर क़लम उठाएगा। इस को अन्त में उसी ख़ुदा की तरफ़ आना पड़ेगा जो इस्लाम ने प्रस्तुत किया है। क्योंकि सहीफ़ा फ़ितरत के एक एक पत्ता में उस का पता मिलता है और कुदरती तौर पर इन्सान उसी ख़ुदा का नक़्शा अपने अंदर रखता है। अत: ऐसे आदमियों का क़दम जब उठेगा वह इस्लाम ही के मैदान की तरफ़ उठेगा। यह भी तो एक महान चमत्कार है।

क़ुरआन मजीद का चैलेंज

अगर कोई क़ुरआन करीम के इस मोजिज़ा का इनकार करे तो एक ही पहलू में हम लोगों को आज़मा लेते हैं। अर्थात अगर क़ुरआन को ख़ुदा का कलाम नहीं मानता तो इस रोशनी और साईंस के ज़माना में ऐसा ख़ुदा तआला की हस्ती पर दावा करने वाला दलीलें लिखे हम वे सारी दलीलें क़ुरआन करीम ही से निकाल कर दिखा देंगे। और अगर तौहीद इलाही के बारे में दलीलें क़लम बंद करे तो वे सब दलीलें भी क़ुरआन करीम ही से निकाल कर दिखा दें गे और वे वैसे दलीलों का दावा कर के लिखें कि ये दलीलें जो क़ुरआन करीम में नहीं या उन सदाक़तों और पवित्र शिक्षाओं पर दलीलें लिखे जिनके बारे में उनका ख़्याल हो कि वे क़ुरआन करीम में नहीं तो हम इस को वाज़िह तौर पर दिखला देंगे कि क़ुरआन का दावा فِیۡہَا کُتُبٌ قَیِّمَۃٌ (अल-बय्यनह:4) कैसा सच्चा और साफ़ है और या असल और फ़ितरती मज़हब के बारे में दलीलें लिखना चाहे तो हम हर पहलू से क़ुरआन करीम का एजाज़ साबित कर के दिखाएँगे और बता देंगे कि सारी सच्चाइयां और पवित्र शिक्षाएं इसी में मौजूद हैं।

अत: क़ुरआन करीम एक ऐसी किताब है कि हर एक किस्म के मआरिफ़ और गूढ़ रहस्य इस में मौजूद हैं लेकिन उनके हासिल करने के लिए में फिर कहता हूँ कि इसी पवित्र क़ुव्वत की ज़रूरत है, अत: ख़ुद अल्लाह तआला ने फ़रमाया है لَّا یَمَسُّہٗۤ اِلَّا الۡمُطَہَّرُوۡنَ (अलवाक़िया :80)

ऐसा ही फ़साहत ,बलाग़त में जैसे सूरत फ़ातिहा का क्रम छोड़कर और क्रम इस्तेमाल करो तो वे उच्च अर्थ और उच्च उद्देश्य जो इस क्रम में मौजूद हैं। मुम्किन नहीं किसी दूसरे क्रम में बयान हो सकें। कोई सूरत ले लो। चाहे कल हो वल्लाहो अहद ही क्यों ना हो। जिस क़दर नरमी, मुलातिफ़त की रियाइत को समक्ष रखकर इस में मआरिफ़ और हक़ायक़ हैं वे कोई दूसरा बयान ना कर सकेगा। ये भी क़ुरआन का चमत्कार ही है। मुझे हैरत होती है जब कुछ नादान मक़ामाते हरीरी या सबअ मुअल्लक़ह को बेनज़ीर और बेमिसल कहते हैं और इस तरह पर क़ुरआन करीम की अतुल्नीयता पर हमला करना चाहते हैं। वे इतना नहीं समझते कि अव्वल तो हरीरी के लेखक ने कहीं उस के बेनज़ीर होने का दावा नहीं किया फिर वह ख़ुद क़ुरआन की एजाज़ी फ़साहत को मानने वाला था। इन बातों को छोड़कर वह रास्ती और सदाक़त को ज़हन में नहीं रखते बल्कि उनको छोड़कर केवल शब्दों की तरफ़ जाते रहे हैं वे किताबें हक़ और हिक्मत से ख़ाली हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 69 से 71 प्रकाशन 2018 कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-6)

आप सब ने पढ़ना है,किसी एक बच्चे ने भी बिना पढ़ाई के नहीं रहना

कोई डाक्टर बने, कोई इंजीनर, कोई वकील और कोई टीचर बने, प्रत्येक ने कुछ ना कुछ बनना है

हमारी जमाअत में बच्चियां ज़्यादा शिक्षित होती हैं, आप सबने पढ़ाई में लड़कों से आगे निकलना है, बच्चों और बच्चियों में एक दूसरे से आगे निकलने में दौड़ लगनी चाहिए।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की जमाअत के बच्चों और बच्चियों को नेक नसीहतें

अहमदी माताओं को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की निहायत क़ीमती नसीहतें

हुज़ूर के हाथ पर बैअत करना मेरी ज़िन्दगी का एक ऐसी घटना थी

जिसको मैं शब्द में बयान ही नहीं कर सकता,यह मेरी ज़िन्दगी का सबसे हसीन दिन था

एसा महसूस हो रहा था कि मैं एक अलग ही दुनिया में हूँ

और मैं चाहती थी कि बस बैठ कर ख़लीफ़ा वक़्त को देखती रहूं और उन की बातें सुनती रहूं।

जब हमने पहली बार हुज़ूर अनवर को देखा तो यह हमारे लिए एक ख़ास अवसर था क्योंकि इस से हमें अमन, मुहब्बत और सब्र नसीब हुआ और हमें ख़लीफतुल मसीह की ज़ात में एक इलाही नूर नज़र आया

हुख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात मेरी बहुत ख़ुशनसीबी थी, उस की याद मेरे साथ मरते दम तक रहेगी, हुज़ूर अनवर के साथ नमाज़ें पढ़ने का बहुत आन्नद आया और दिल को तसकीन भी पहुंची

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के बाद नौ मुबाईन के ईमान अफ़्रदिन विचारों

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

22 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक सोमवार)

हीवसटन से रवानगी और ग्वेटामाला में पधारना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6:30 बजे मस्जिद बैतुलसमीअ में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

आज प्रोग्राम के अनुसार हीवसटन से मध्य अमरीका के देश ग्वेटामाला के लिए रवानगी थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का किसी भी मध्य अमरीका के देश के लिए यह पहला सफ़र था।

7 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर को विदा कहने के लिए मर्द औरत मस्जिद के बाहरी सेहन में जमा थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला हीवसटन एयरपोर्ट के लिए रवाना हुआ।

हुज़ूर अनवर के आने से पहले सामान की बुकिंग और बोर्डिंग कार्ड के हुसूल की कार्रवाई पूर्ण हो चुकी थी। सवा आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट पर तशरीफ लाए। एयरपोर्ट पर यूनाईटिड एयर लाईन के सीनीयर स्टाफ़ ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एक प्रोटोकोल के तहत इमीग्रेशन की कार्रवाई के बाद स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए।

पौने दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला जहाज़ पर सवार हुए। यूनाईटिड एयर लाईन के जाहज़ UA 1751 10 बज कर 40 मिनट पर हीवसटन से ग्वेटामाला के Guatemala City Airport के लिए रवाना हुआ।

जहाज़ के रवाना होने के बाद पायलट केबिन से यह ऐलान हुआ कि हमारे जहाज़ पर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद सफ़र कर रहे हैं। आप अमरीका के सफ़र पर हैं। हम हुज़ूर को ख़ुश-आमदीद कहते हैं। हुज़ूर अनवर अमरीका में सैनेटर्ज़ और कांग्रस मैन से मिलेंगे। हुज़ूर अनवर चैंपीयन आफ़ पीस हैं। हुज़ूर ग्वेटामाला भी जा रहे हैं।

लगभग अढ़ाई घंटे के सफ़र के बाद ग्वेटामाला के स्थानीय वक़्त के अनुसार 12 बजकर 10 मिनट पर जहाज़ ग्वेटामाला सिटी एयरपोर्ट पर उतरा। ग्वेटामाला का वक़्त हीवसटन (अमरीका) के वक़्त से एक घंटा पीछे है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जहाज़ से बाहर तशरीफ़ लाए तो आदरणीय कैप्टन माजिद अहमद ख़ान साहिब ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। महोदय की निगरानी में ह्युमैनिटी फ़र्स्ट अमरीका के अधीन नासिर हस्पताल की बुनियाद पूर्ण हुई है जिसका इस सफ़र में उद्घाटन का प्रोग्राम है।

इस के बाद आदरणीय अब्दुल सत्तार ख़ान साहब अमीर मुबल्लिग़ इंचार्ज ग्वेटामाला और आदरणीय David Gonzoles जनरल सेक्रेटरी जमाअत ग्वेटामाला ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया।

इसके बाद एक विशेष प्रबंध के अधीन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एक स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए जहां इमीग्रेशन की कार्रवाई पूर्ण हुई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए और Porta Hotel के लिए रवानगी हुई। यह होटल एयरपोर्ट से 40 किलोमीटर के दूरी पर Antigua शहर में स्थित है। देश की राजधानी ग्वेटामाला सिटी और Antigua लगभग जुड़वां शहर हैं। पुलिस की गाड़ी और मोटर साईकल ने क़ाफ़िला को Escort किया। हुज़ूर अनवर की गाड़ी के पीछे भी सैक्योरिटी की गाड़ी थी। इस सैक्योरिटी उसको एड का इंचार्ज ग्वेटामाला आर्मी का एक रिटायर्ड जनरल था।

लगभग एक घंटा के सफ़र के बाद दो बजे दोपहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ होटल Porta पधारे जहां जमाअत के लोगों मर्द औरत, बच्चों और बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा का भरपूर स्वागत किया। लोगों ने नारे बुलंद किए। बच्चियां अपनी लोकल ज़बान में स्वागत गीत और दुआ की नज़्में पेश कर रही थीं।

स्वागत करने वालों में ग्वेटामाला के स्थानीय लोगों और नौ मुबाईन के अतिरिक्त मैक्सीको,इक्वाडोर, हंडूर विस, पानामा, को स्टार यक्का, ईल सल्वाडोर, पैरागोवा और बेलीज़ से आने वाले नौ मुबाईन भी शामिल थे।

इसके अतिरिक्त अमरीका और कैनेडा से भी एक बड़ी संख्या में जमाअत के

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

जलसा का मक़सद .....यही है कि अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल करने की कोशिश की जाए, उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल में बढ़ाई जाए।

अगर मेहमान का हक़ है कि मेहमान-नवाज़ी की जाए तो मेज़बान का भी हक़ है कि मेहमान फिर उस का हक़ अदा करे और इस पर बोझ ना बने

मर्कज़ी जलसा यूके का ही है और यहां शमिल होने की बाहर के लोगों की कोशिश ज़्यादा होती है क्योंकि ख़िलाफ़त का मर्कज़ यहां है

सुन्नते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिसालें वर्णन कर के मेहमान-नवाज़ी की एहमीयत का ज़िक्र, मेज़बानों और मेहमानों को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की नसीहत, जलसा के दिनों में नमाज़ बाजमाअत, तहज्जुद के क़ियाम, माहौल को पाकीज़ा और अपनी हालतों को बेहतर बनाने की नसीहत। जलसा सालाना के विभिन्न विभागों रोटी प्लांट, लंगर ख़ाना इत्यादि का ज़िक्र, सलाम को फैलाना, इसीतरह दुनिया भर के अहमदियों और जलसा सालाना की कामयाबी के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 2 अगस्त 2019 ई. स्थान - हदीक़तुल महदी, अलटन हेम्पशर, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला हमें आज फिर जलसा सालाना यू के में शामिल होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़र्मा रहा है। पिछवे महीने जर्मनी का जलसा सालाना आयोजित हुआ। दुनिया की बड़े, पश्चिमी देशों की जमाअतों में से कैनेडा का जलसा हुआ (जो जर्मनी के जलसा के दिनों में ही था फिर पिछले महीने अमरीका का जलसा सालाना हुआ और दुनिया के और भी बहुत सारे देशों में जलसा हुए और बड़ी शान से हम हर जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन के वादे पूरे होते देखते हैं। परन्तु यू के के जलसा सालाना की अपनी एक हैसियत इस लिहाज़ से बन चुकी है कि दुनिया की नज़र खासतौर पर इस तरफ़ रहती है, अपनों की भी ,ग़ैरों की भी और हर एक लिहाज़ से इस जलसा को विश्वव्यापि जलसा की हैसियत दी जाने लगी है। और यह जलसा सिर्फ़ अब यू के का जलसा नहीं रहा यद्यपि कि जैसा कि मैंने जर्मनी के जलसा के बारे में भी कहा था कि अब जर्मनी का जलसा भी विश्वव्यापि हैसियत इख़्तियार कर गया है। बहुत से मुल्कों की वहां भी नुमाइंदगी थी और हाज़िरी के लिहाज़ से भी शायद जर्मनी के जलसा की हाज़िरी यहां से ज़्यादा हो,लेकिन फिर भी मर्कज़ी जलसा यू के का ही है और यहां शामिल होने की बाहर के लोगों की कोशिश ज़्यादा होती है क्योंकि ख़िलाफ़त का मर्कज़ यहां है। अत: इस लिहाज़ से दुनिया के विभिन्न देशों से अपने भी और ग़ैर भी यू के के जलसा सालाना में शामिल होने की कोशिश करते हैं। इस लिहाज़ से यहां जलसा के काम करने वालों की ज़िम्मेदारी भी बहुत बढ़ जाती है और फिर यहां हदीक़तुल महदी में जो यह अस्थाई शहर बनाया गया है इस के इंतिज़ामात भी ख़ास तवज्जा की मांग करते हैं। अत: इस लिहाज़ से जैसा कि मैं कारकुनों को उनकी डयूटियों और ज़िम्मेदारीयों की तरफ़ ध्यान दिलाया करता हूँ तो इस वक़्त मैं इस हवाले से पहले बात करूँगा।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यू के में रहने वाले अहमदी बूढ़े, जवान, बच्चे, औरतें, लड़कीयां पिछले 35 साल से जब से कि ख़िलाफ़त का मर्कज़ यहां मुंतक़िल हुआ और जलसों का आयोजन ख़लीफ़ा वक़्त की मौजूदगी में हुआ जलसा के इंतिज़ामात कर रहे हैं और डयूटीयाँ बड़ी ख़ुशदिली से दे रहे हैं। यद्यिप कि जलसा सालाना की तारीख़ यू के की भी बहुत पुरानी है लेकिन इस वक़्त के जलसा तो अब शायद यहां के एक हलक़े की माहाना मीटिंग से भी संख्या के लिहाज़ से कम होते होंगे। इसलिए मैंने पिछले 35 सालों की तारीख़ का हवाला दिया है जो ख़िलाफ़त अहमदिया के मर्कज़ की यू के में जलसों की तारीख़ है।

बहरहाल आरम्भ में जो जलसे आयोजित हुए उनमें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह तआला ख़ुद बहुत ज़्यादा रहनुमाई करते थे। यहां इंतिज़ामात बताने के लिए उन को बहुत मेहनत करनी पड़ी। पाकिस्तान के कुछ ओहदेदारों की भी मदद लेनी पड़ी जिन्होंने यहां की इंतिज़ामीया के साथ मिलकर काम किया। लंगर का इंतिज़ाम एक बहुत बड़ा इंतिज़ाम है। यहां सुविधाएं और सहूलतें भी पाकिस्तान की तरह ,इस तरह नहीं है जिस तरह हम काम करना चाहते हैं इसलिए शुरू में चार पाँच हज़ार का इंतिज़ाम करना भी उनके लिए मुश्किल था और इस तरह ही था जिस तरह कि दो अढ़ाई लाख का इंतिज़ाम कर रहे हैं। मैं ख़िलाफ़त की यहां हिज्रत के बाद पहली बार 1988 ई के जलसा में शामिल हुआ था और इस वक़्त इंतिज़ामीया की हालत देखकर अंदाज़ा होता था कि पाँच छ: हज़ार के लिए इंतिज़ाम करना भी उनको किस क़दर परेशानी में डाल रहा है। बहरहाल आज हम देखते हैं कि इंतिज़ामात में यहां के कारकुनान शायद रब्वह के कारकुनान की मदद की सलाहीयत भी रखते हैं। पिछले हफ़्ते कारकुनान के साथ जलसा के इंतिज़ामात की inspection के बाद जो खाना था इस में मेरे क़रीब ही रब्वह से आए हुए एक नाज़िर जो नाज़र अमूरे ख़ारिजा हैं ओर जो नायब अफ़्सर जलसा सालाना भी हैं बैठे हुए थे। खाने के बाद मैंने देखा कि उन्होंने रब्वह से आए हुए एक नुमाइंदे कारकुन को बुलाया और कुछ बातें करते रहे। उनसे मैंने पूछा कि क्या मसला पैदा हो गया है? कहने लगे कि लंगर की यह रोटी जो हम खा रहे हैं यह क्वालिटी में बड़ी अच्छी रोटी है और हम रब्वह में रोटी पकाने का जो ट्रायल करते हैं। (वहां भी अल्लाह के फ़ज़ल से मुस्तक़िल ट्रायल होते हैं, लंगर ख़ाने अस्थायी तौर पर एक-आधा दिन के लिए चलाए जाते हैं ताकि मशीनों को चालू रखें और काम की आदत भी रहे, डयूटियों की आदत भी रहे। तो बहरहाल कहते कि)काफ वहां हमारी जो रोटी है वह इस स्तर की नहीं होती तो कहने लगे में इस कारकुन को कह रहा था कि यहां के रोटी प्लांट वालों से इस रोटी के स्तर का पता करें कि किस तरह बनाते हैं? आटे और पानी की तुलना क्या है? यह आटे और पानी की निसबत काऊंट (count) करती है। उनसे नुस्ख़ा पूछो। तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब हमारे यहां काम करने वाले अपने तजुर्बात के बाद इतने माहिर हो गए हैं कि उनकी रोटी रब्वह के आफ़सरों को भी पसंद आने लग गई है।

इस बार रोटी प्लांट में काम करने वाले नौजवान इंजनीयरज़ ने आटा गोंधाई की मशीन में भी कुछ improvements की हैं जिससे आटा निकालने में और अधिक आसानी पैदा हुई है। रोटी प्लांट के इंचार्ज और नौजवान इंजीनर जो वाकिफ नौ भी हैं और इस पर काम कर रहे हैं वह और उनकी टीम के लोग भी अब इस कोशिश में हैं कि इस को मज़ीद बेहतर किया जाए और आटा गोंदाई की मशीन से लेकर पकवाई की मशीन तक सीधा आटा पहुंचता रहे और इस वक़्त कारकुनों को बाल्टियों के द्वारा जो आटा पहुंचाना पड़ता है वह माध्यम जो है वह ख़त्म हो जाए।

इस का मतलब ये नहीं कि हम इस ऑटोमेशन की वजह से कारकुनों को ख़िदमत से महरूम कर देंगे। यह कारकुन दूसरी बेहतर ख़िदमत पर लगा दिए जाऐंगे इंशा अल्लाह तआला और यही हमारा जमाअत का इमतियाज़ है कि बचपन से ले के बड़े होने तक हमारे कारकुनान बड़ी ख़ुशदिली से हर काम में अपनी बेहतरीन सलाहियतों के साथ काम करने की कोशिश करते हैं। बहरहाल यह बयान करने का मेरा मक़सद यह है कि कहाँ तो वह वक़्त था कि चार पाँच हज़ार खाना खिलाना इंतिज़ामीया के लिए एक चैलेंज होता था और नब्बे प्रतिशत रोटी बाज़ार से ख़रीदी जाती थी। एक छोटा सा सैकण्ड हैंड रोटी प्लांट लिया गया था जो थोड़ी थोड़ी देर बाद ख़राब भी होता रहता था। इंजनीयरज़ मुस्तक़िल उस के ऊपर बैठे रहते थे और इस में हमारे बुज़ुर्ग पुराने इंजनीयरज़ हैं वे काफ़ी काम करते रहे और वे प्लांट सिर्फ़ चंद हज़ार रोटी पकाता था और वे भी गोल नहीं होती थी। इसी तरह ब्रेड (pita bread)की तरह होती थी और कहाँ अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पैंतीस चालीस हज़ार लोगों के लिए ये ख़ुद रोटी पकाते हैं, लाखों की संख्या में रोटी पकती है और इस क्वालिटी में है जो मैंने भी की, लोगों को भी पसंद आई और समय समय पर मैं इस रोटी को चैक करता भी रहता हूँ, वह इस से बहुत बेहतर है जो पहले रोटी पकती थी। अल्लाह तआला इन नौजवानों को जो ये काम कर रहे हैं उनके हुनर में भी इज़ाफ़ा करे और उनको अक़्ल भी दे और इस में मज़ीद बढ़ाता चला जाए कि जलसा के मेहमानों की पहले से बढ़कर ख़िदमत करने वाले हों।

इसी तरह लंगर ख़ाने में जो खाना पकाने की टीमें हैं वे अपने अपने इंचार्ज साहिबान के साथ बड़ी मेहनत और लगन से काम कर रही हैं। खाने का स्तर जो है वह भी बहुत बेहतर है। अल्लाह करे कि इन तीन दिनों में भी यह बेहतर रहे ।

फिर लंगर ख़ाने के हवाले से देगें धोने का विभाग है। यह भी एक बहुत बड़ा काम है । उनको कुछ साल पहले जर्मनी से हमारे अहमदी इंजनीयरज़ की बनाई हुई देगें धोने की मशीन मंगवा कर दी गई थी। जर्मनी वाले तो उनको बड़ा पसंद करते हैं। वहां बड़ी कामयाब है और वह उस के बड़े क़ाइल हैं कि बड़ी जल्दी यह मशीन देग धो कर ख़ुद ही बाहर निकाल देती है। यहां हमारे इस विभाग ने दो तीन साल तक तो इस मशीन को इस्तिमाल किया और इस के साथ हाथ से भी देगें धोते रहे, यह काम जारी रहा और मेरे कहने पर कि इस मशीन को ज़रूर इस्तिमाल करना है उन्होंने किया लेकिन पिछले साल से उन्होंने बड़ी मिन्नत से यह कहना शुरू किया कि हमें हाथ से ही धोने दें कि हम कम वक़्त में ये देगें धो लेते हैं बल्कि3/1 वक़्त में धो लेते हैं अर्थात जितनी देर में मशीन एक देग धोती है हम तीन देगें धो लेते हैं और धोते भी इस से साफ़ और बेहतर हैं। मैंने उनके इंचार्ज को मज़ाक़ से उस दिन कहा था कि लगता है कि आपने इस विभाग में कोई जिन्न रखे हुए हैं जो इतनी सफ़ाई कर जाते हैं क्योंकि जर्मनी वाले अभी तक इस बात को मानने को तैयार नहीं कि इतने कम वक़्त में कोई देग धो सकता है। बहरहाल इस विबाग में ये लोग बड़ी मेहनत का काम कर रहे हैं। एक तो है कि मेहनत करना, वक़्त लगा देना और यह सिर्फ़ मेहनत नहीं कर रहे बल्कि यह बड़ी मेहनत का काम भी है। पाकिस्तान में, कादियान में तो यह काम मज़दूरों से मज़दूरी देकर करवाया जाता था लेकिन यहां बड़े इख़लास और भावना से कारकुन यह काम करते हैं

फिर खाना खिलाने का विभाग है। इस में भी इस बार उन्होंने बेहतरी की कोशिश की है। यहां जगह भी, मार्कियां भी बड़ी की हैं ताकि मेहमानों को आराम से और कम वक़्त में खाना खिलाया जा सके।

फिर दूसरे विभाग हैं नज़ाफ़त और सफ़ाई का विभाग है, कार पार्किंग का विभाग है, ट्रैफ़िक का विभाग है। जलसा गाह के अंदर विभिन्न और विभाग हैं। सैक्योरिटी का एक बहुत बड़ा अहम विभाग है और इसी तरह और विभिन्न विभाग हैं और अपनी अपनी जगह पर हर विभाग ही बड़ा अहम है। इन सारे विभागों में काम करने के लिए हज़ारों कारकुनान जो हैं उनको काम करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। इसी तरह कारकुनात (काम करने वालियां) हैं उनको काम करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। अल्लाह तआला इन सबको उत्तम रंग में काम करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और जिस तरह कि मैं हमेशा कारकुनों को कहा करता हूँ कि जिस शौक़ और जज़्बे से आपने अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए पेश किया है। आपका काम है कि इस जज़्बे को आख़िर वक़्त तक क़ायम रखें। जलसा के बाद भी वाईंड अप (wind up)का विभाग होगा और इस में एक हफ़्ता तक़रीबन काम करना पड़ता है

और इस बात का इज़हार कि आपने जज़्बे को क़ायम रखा है आप लोगों के चेहरों की मुस्कुराहटों और मेहमानों के साथ इज़्ज़त- तथा एहतिराम से पेश आने से होगा। अत: कारकुनान और कारकुनात जो इस जलसा के मेहमानों की ख़िदमत पर विभिन्न जगहों पर काम कर रहे हैं इन को इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए वे इस जलसा में दोहरा सवाब कमा रहे हैं और बरकतों से लाभान्वित हो रहे हैं। एक जलसा सालाना में शामिल हो कर इस जलसा सालाना की जो बरकतें हैं इस से फ़ैज़ पा कर और दूसरे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत कर के इन बरकतों को हासिल कर रहे हैं।

मेहमान-नवाज़ी अल्लाह तआला को भी पसंद है। इतनी पसंद है कि इस का ज़िक्र हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हवाले से अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में भी दो बार फ़रमाया है । अगर मेहमानों को खाना पेश करना कोई मामूली बात होती तो मेहमानों के आने के ज़िक्र पर हर बार उनको खाना पेश करने का ज़िक्र ना होता। और फिर यह कि सलाम दुआ के बाद जो पहला काम किया वह शीघ्र भुना हुआ बछड़ा पेश कर दिया। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ

(आद 70) फिर वह भुना हुआ बछड़ा बड़ी जल्दी से ले आया। इस ज़माने में जो मेहमान नवाज़ी हो सकती थी वह की और अपने जानवर ज़िबह कर के उन्हें मेहमानों के सामने पेश करना भी बहुत बड़ी मेहमान नवाज़ी थी और वहां फ़ौरी तौर पर मुहय्या भी हो सकती थी। उस वक़्त जो मेहमान-नवाज़ी का तरीक़ा था, उस का जो उच्च स्तर था वह दिखाया गया। आजकल के हालात के अनुसार जो मेहमान-नवाज़ी है वह हमें करनी चाहिए। यहां भी मेहमान की ऐसी ही ख़ातिरदारी करनी चाहिए। यह ज़रूरी नहीं है कि ज़रूर मेहनत से की जाए और बड़ी मेहनत से बिछड़े तलाश किए जाएं बल्कि जो आसानी से और जल्द मुहय्या हो सके वह हमें करना चाहिए। उनको वह आसानी से और जल्द मुहय्या भी हो सकता था और उच्च मेहमान-नवाज़ी भी थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उच्च आदर्श इस बारे में हमारे सामने है। अगर खजूरें मिली हैं तो वे पेश कर दीं। अगर गोश्त या कोई और अच्छा खाना है तो वह पेश कर दिया। अगर बकरी का दूध है तो वह पेश कर दिया। अगर अपने पास कुछ नहीं है तो सहाबा को फ़रमाया कि इस मेहमान को अपने घर ले जाओ और उनकी मेहमान-नवाज़ी करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वालों को जिन तीन बातों के करने का फ़रमाया है वे सब ऐसी हैं जो एक दूसरे के हुक़ूक़ से सम्बन्ध रखती हैं, समाज को अमन वाला बनाने से सम्बन्ध रखती हैं। पहली बात यह कि अच्छी बात करो या ख़ामोश रहो। फ़ुज़ूल किस्म की बातें कर के बदअमनी पैदा ना करो। आपस में रंजिशें पैदा ना करो। एक मोमिन व्यर्थ और बेहूदा बातें नहीं करता। दूसरे यह कि अपने पड़ोसी की इज्ज़त करो कि पड़ोसी का बहुत बड़ा हक़ होता है कि इस की इज़्ज़त की जाए और इस का ख़्याल रखा जाए। यहां जो इस जलसा में शामिल होने वाले हैं, आने वाले मेहमान भी, काम करने वाले भी और मेहमानों के लिए जो कारकुनान काम कर रहे हैं वे भी सब एक दूसरे के पड़ोसी भी हैं। अत: इस लिहाज़ से मेहमानों को भी काम करने वालों की इज़्ज़त और सम्मान करना चाहिए और कारकुनों को भी मेहमानों की इज़्ज़त और सम्मान करना चाहिए। फिर आपस में जो एक दूसरे को मिलते हैं तो वह इज़्ज़त तथा सम्मान से पेश आएं और तीसरी बात यह बताई कि अपने मेहमान का सम्मान करो।

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 47)

अब यह खासतौर पर मेज़बानों के लिए है। एक सुन्दर और अमन वाले परिवेश की स्थापना के लिए यह बुनियाद हैं। अल्लाह तआला के हुक्मों में से ये हुक्म हैं और मोमिन की यह निशानी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जब ज़्यादा मेहमान आते थे तो सहाबा में बांट दिया करते थे और फिर मेहमानों से पूछा भी करते थे कि क्या तुम्हारे भाईयों ने तुम्हारी मेहमान-नवाज़ी अच्छे तरीके से की और फिर सहाबा भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सोहबत प्राप्त और तर्बीयत पाने वाले थे, आप से फ़ैज़ पाने वाले थे वे ऐसी मेहमान-नवाज़ी करते थे कि मेहमान जवाब दिया करते थे कि हमें हमारे मेज़बानों ने अपने से बेहतर रखा और अपने से बेहतर खिलाया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 357 हदीस 15644 प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की मेहमान-नवाज़ी के यह तरीक़ थे। यद्यिप वह भी धर्म समझने के लिए और धर्म का इलम हासिल करने के लिए आया करते थे और यहां जो आने वाले हैं वे भी इसी मक़सद के लिए आ

रहे हैं और हम इसी बात पर मुक़र्रर किए गए हैं कि जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बुलाने पर विशेष रूप से धार्मिक जलसा में शमूलीयत के लिए आ रहे हैं हम इन मेहमानों की खासतौर पर मेहमान-नवाज़ी करें।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अल्लाह तआला ने जमाअत के संसाधनों में भी पहले से बहुत ज़्यादा बेहतरी पैदा कर दी है और जमाअती निज़ाम के अधीन भी मेहमान-नवाज़ी होती है बल्कि कई घरों में ठहरे हुए मेहमानों के लिए भी घर वालों को इजाज़त है और इस का इंतिज़ाम है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जारी लंगर से अपने मेहमानों के लिए खाना ले जा सकते हैं, ले जाना चाहें तो ले जाएं लेकिन सहाबा के हालात तो ऐसे नहीं थे कि उनके लिए कोई मर्कज़ी इंतिज़ाम भी होता। वह भी कोई नहीं था और उनके ज़ाती हालात भी शुरू में अक्सर के ऐसे नहीं थे कि उनको सुविधाएं हों। बल्कि ऐसी घटनाएं मिलती हैं कि बच्चों को भी भूखा सुला दिया, ख़ुद भी मियां बीवी भूके रहे और मेहमान को जो थोड़ा बहुत खाना था वह खिला दिया और फिर उनके इस काम को अल्लाह तआला ने भी ख़ूब सराहा और उनकी इस बात पर ख़ुश हुआ और इस तरह की घटना मिलती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस विशेष घटना की सूचना दी।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मनाकिब अल-अनसार हदीस 3798)

अत: वे लोग जिनका उस्वा हमें अपनाने का हुक्म है, क़ुर्बानी कर के मेहमान--नवाज़ी किया करते थे और आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में बहुत से लोग हैं जो क़ुर्बानी की भावना से मेहमान-नवाज़ी करते हैं और यही हमें करनी चाहिए। बावजूद जमाअत की सहूलत के कुछ लोग ख़ुद मेहमान-नवाज़ी करना चाहते हैं। कारकुनान जो डयूटी पर हैं, किसी भी ख़िदमत पर तैनात हैं उन्हें चाहिए कि उनमें से कुछ नहीं बल्कि हर एक सौ फ़ीसद क़ुर्बानी के जज़्बे से उत्तम आचरण से मुज़ाहरा करते हुए मेहमान-नवाज़ी करे। जैसा कि मैंने कहा कि अब भूख की क़ुर्बानी तो हमसे नहीं मांगी जा रही। इस वक़्त जो क़ुर्बानी है और कारकुनान जो क़ुर्बानी करते हैं वह वक़्त की क़ुर्बानी है लेकिन इस के साथ ही जज़्बात की क़ुर्बानी भी मांगी जाती है। कई बार मेहमान अनुचित व्यावहार दिखा देते हैं तो इस हालत में जज़्बात की क़ुर्बानी करनी पड़ती है, सब्र करना पड़ता है, ख़ामोश होना पड़ता है। इसलिए ख़ामोश होना पड़ता है कि हमें मेहमानों पर हुस्न ज़न्नी है कि ये लोग नेक नीयती से धार्मिक और रुहानी प्यास बुझाने के लिए आए हैं। शायद किसी ग़लतफ़हमी की वजह से उन्होंने ज़्यादती का रवैय्या दिखाया हो इसलिए हम क्षमा कर के चाहे अपनी ग़लती ना भी हो उनका काम कर देते हैं और यह उच्च अख़लाक़ हैं जो इस ज़माने में हमें मेहमानों के लिए दिखाने चाहिएं जो इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम हम से चाहते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जिनसे आपकी मेहमानों की दिलदारी और मेहमान-नवाज़ी के उच्च स्तर क़ायम किए हुए नज़र आते हैं।

एक बार जब दूर दराज़ के एक इलाक़े से आए हुए मेहमान लंगर ख़ाने के कारकुनों के इनकार की वजह से कि हम आपका सामान नहीं उतारेंगे नाराज़ हो कर वापिस चले गए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब इस बात का पता चला तो बयान किया जाता है कि आप ऐसी हालत में कि जूता पहनना भी मुश्किल था जैसे कोई बहुत ही हंगामी सूरत हाल पैदा हो गई हो जल्दी जल्दी उनके पीछे पैदल चले गए। वे लोग टांगे पर जा रहे थे। बहरहाल उन लोगों ने जब देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ला रहे हैं। उनको आते देखा तो तांगा खड़ा कर दिया और टांगे से उतरे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने उनसे क्षमा चाही और वापस चलने को कहा और उनका तांगा वापस मोड़ा और उन्हें कहा कि आप टांगे पर बैठ जाएं और मैं आपके साथ साथ पैदल चलता हूँ। बहरहाल मेहमान भी शर्मिंदा हुए और टांगे पर ना बैठे बल्कि पैदल ही चलते रहे। आख़िर जब लोग वापस लंगर ख़ाने आए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद उनका सामान उतारना शुरू किया। उस के लिए हाथ बढ़ाया तो इस पर वे ख़ुद्दाम जो पहले ही शर्मिंदा हो रहे थे फ़ौरी तौर पर आगे बढ़े और उन मेहमानों का सामान उतारा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस वक़्त तक वहां मौजूद रहे जब तक कि उनकी रिहायश और खाने का तसल्ली बख़्श इंतिज़ाम नहीं गया।

(उद्धरित सीरतुल महदी जिल्द 2 हिस्सा 4 पृष्ठ 56-57 रिवायत नम्बर 1069)

आप ने अपने कारकुनों को एक अवसर पर फ़रमाया कि देखो बहुत से मेहमान आए होते हैं। कुछ को तुम पहचानते हो कुछ को नहीं । इसलिए उचित यह है कि सबको सम्मान योग्य जान कर उनकी तवाज़ो और ख़िदमत करो। फ़रमाया तुम पर मेरा हुसन ज़न (सुधारणा) है कि मेहमान को आराम देते हो।(उद्धिरत मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 226) अत: यह हुस्न ज़न हमने आज भी क़ायम रखना है।

इस के बाद में मेहमानों को भी कुछ कहना चाहता हूँ। एक बात तो पहले मैंने की कि एक दूसरे के जज़्बात का ख़्याल रखना सब का फ़र्ज़ है; मेहमानों का भी, मेज़बानों का भी। जहां इस्लाम हमें मेहमानों की इज़्ज़त और सम्मान का हुक्म देता है तो साथ ही मेहमानों को भी हुक्म देता है कि तुम ज़्यादा बोझ मेज़बान पर ना बनो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी के यहाँ ज़्यादा लंबा मेहमान ठहरना जो है और घर वाले पर जो बोझ बनना है वह इसी तरह है जिस तरह तुम सदक़ा ले रहे हो।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अदब बाब इकराम अलज़ैफ़ हदीस 6135)

हर एक के हालात ऐसे नहीं होते कि शुरू से आख़िर तक एक जैसी मेहमान--नवाज़ी कर सके तो मेहमान को भी हुक्म है कि तुम भी घर वालों का ख़्याल रखो। अगर ज़्यादा क़ियाम है तो फिर इस तरह रहो जिस तरह घरवाला रहता है और घर वालों की काम काज में भी कोई मदद की ज़रूरत पड़े तो वह भी कर देनी चाहिए इन मुल्कों में तो खासतौर पर। प्राय तो लोग करते हैं और यही एक ख़ूबसूरत समाज के लिए ज़रूरी है। जहां यह एहसास पैदा हो जाए कि दूसरा शख़्स हम पर बोझ है वहां ख़ुलूस और मुहब्बत में कमी आ जाती है और जब इस में कमी आ जाए तो फिर हालात शान्ति वाले नहीं रहते। अत: मेहमान को भी याद रखना चाहिए कि मेहमान का भी यह फ़र्ज़ है कि अपने ज़िम्मा जो फ़राइज़ हैं उनको अदा करे। अगर मेहमान का हक़ है कि मेहमान-नवाज़ी की जाए तो मेज़बान का भी हक़ है कि मेहमान उस का हक़ अदा करे और इस पर बोझ ना बने। मेहमान के इस हक़ को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिर्फ कुछ दिन रोज़ तक सीमित किया है। यहां इंतिज़ामीया को मैं यह भी कह दूं कि हमारे जलसा पर आए हुए जो मेहमान हैं अगर एक महीना भी ठहरते हैं तो हमने उनकी मेहमान-नवाज़ी करनी है। इस से यह ना समझें कि तीन या चार दिन के बाद हम ने मेहमान-नवाज़ी ख़त्म कर देनी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम ने अपने कामों के हवाले से लंगर ख़ाने के क़ियाम को भी अपनी शाख़ाओं में से एक शाख़ बताया है।

(उद्धरित हकीकतुल वह्य, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 22 पृष्ठ 221)

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम के लंगर में आने वालों के साथ जब भी वे आएं जलसा के दिनों में नहीं आम हालात में भी उच्च अख़लाक़ का मुज़ाहरा चाहिए।

फिर एक हुक्म हसीन मुआशरे का जिस पर मेहमानों को खासतौर पर इस जलसा के माहौल में अनुकरण करना चाहिए वह है सलाम को रिवाज देना। आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नत में जाने वालों की एक ख़ुसूसीयत यह भी बताई थी कि वे सलाम को रिवाज देने वाले हैं

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 54)

फिर आप ने फ़रमाया कि जिसे तुम जानते हो या नहीं जानते तुम उनको सलाम

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

“अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।”

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

करो

(सही अल-बुख़ारी किताबुल ईमान बाब इफ़शा अस्सलाम हदीस28)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम ने भी जलसा के मक़सदों में से एक मक़सद यह बयान फ़रमाया था कि ताकि लोग जमा हूँ और इस तरह जमा होने से मुहब्बत का रिश्ता और परिचय का रिश्ता आपस में बढ़े।

(उद्धरित आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 4 पृष्ठ 352)

अत: सलाम इस मुहब्बत और परिचय के माध्यम को बढ़ाने का एक बेहतरीन ज़रीया है। भाईचारा और तआरुफ़ को बढ़ाने का यह एक बेहतरीन माध्यम है और इस का एक यह भी फ़ायदा है कि जिनकी आपस की रंजिशें हैं किसी भी वजह से वह भी दूर होंगी

फिर यहां जो लोग आए हैं वह विशेष रूप से अल्लाह के लिए आए हैं और इसी सोच के साथ आना चाहिए । उनके आने का एक लिल्लाहि मक़सद है। धार्मिक और इलमी और रुहानी प्यास को बुझाने के लिए आए हैं या उस को प्राप्त करने के लिए आए हैं और यह मक़सद जैसा कि मैंने कहा यही होना चाहिए। तो फिर आपस के सम्बन्धों को भी हर एक को बेहतर करना चाहिए और रंजिशों और नफ़रतों को दूर करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जलसा में आकर इस मक़सद को पूरा करने की भी कोशिश होनी चाहिए कि "दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो और अपने मौला करीम और रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल पर ग़ालिब हो जाए।"

(आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 4 पृष्ठ 351)

अत: इस मुहब्बत को प्राप्त करने के लिए जलसा के प्रोग्राम में खासतौर पर शामिल हों उसे सुनें, ग़ौर करें। जलसा के दौरान भी और चलते फिरते भी ज़िक्र इलाही करते रहें और नमाज़ बाजमाअत ख़ास फ़िक्र और ध्यान से अदा करें और नवाफ़िल और तहज्जुद पढ़ने की तरफ़ भी तवज्जा दें। खासतौर पर जिनका यहां क़ियाम है वह इस माहौल को पाकीज़ा करने की कोशिश करते चले जाएं। अपनी हालतों में बेहतरी पैदा करने की कोशिश करें और जो सुबह से लेकर शाम तक आते हैं उनका भी फ़र्ज़ है कि इस मक़सद को पूरा करने वाले बनें जो जलसा का मक़सद है और वह यही है कि अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल करने की कोशिश की जाए। इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल में बढ़ाई जाए। और यह बहुत बड़ा काम है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सपुर्द फ़रमाया है कि अल्लाह तआला और इस के रसूल की मुहब्बत हमारे दिलों पर ग़ालिब आ जाए। अगर जलसा में शामिल होने वाले इस मक़सद को सामने रखकर उस के हुसूल की भरपूर कोशिश करेंगे तो समझें आपने अपने मक़सद को पा लिया, जलसा में आने का मक़सद पूरा हो गया और फिर रिहायश और खाना तो गौण चीज़ें बन जाएँगी। असल मक़सद यह होगा कि हमने अपनी रुहानी हालत को बेहतर से बेहतर करना है, इस को तरक़्क़ी देनी है। अगर यह हासिल हो गया तो जैसा कि मैंने कहा जलसा पर आने के मक़सद को पा लिया।

इसी तरह इंतिज़ामी लिहाज़ से मेहमान इस बात का भी ख़्याल रखें कि आरिज़ी और वसीअ इंतिज़ाम में कुछ कमियां रह जाती हैं। अगर कहीं ऐसी सूरत देखें तो इतना ध्यान न करें। कारकुनों को तो मैंने कहा है कि वे किसी सख़्ती को अगर किसी की तरफ़ से मुज़ाहरा हो तो बर्दाश्त करें लेकिन मेहमानों का भी काम है, शामिल होने वालों का भी काम है कि कमज़ोरियों पर ध्यान न करें और अगर ऐसी कमियां देखें तो कारकुनों का हाथ बटाएं। मैंने देखा है कुछ मेहमान अगर ज़रूरत हो तो बड़े शौक़ से ख़ुद मेज़बान बन कर काम करना शुरू कर देते हैं । जैसे ग़ुसल ख़ानों की सफ़ाई है। अगर ज़्यादा भीड़ हो और डयूटी पर मुतय्यन कारकुन पूरी तरह सफ़ाई का इंतिज़ाम ना कर सकें तो कुछ मेहमान ख़ुद उन डयूटी वालों के साथ यह काम करने लग जाते हैं और यही भावना एक अहमदी में होनी चाहिए और यही वह हक़ीक़ी रूह है जो आपस के पर-ख़ुलूस मुआशरे को क़ायम करती है। मेहमान सिर्फ़ कारकुनान को आज़माने और इम्तिहान लेने में अपना वक़्त नष्ट ना करें बल्कि अगर ज़रूरत हो तो हर विभाग में जैसा कि मैंने कहा मददगार हो जाएं।

इसी तरह पार्किंग इत्यादि में भी कई बार भीड़ की अवस्था में हंगामी सूरत पैदा हो जाती है। ऐसे हालात में कारों पर आने वाले सब्र और हौसले से इंतिज़ामीया से सम्पूर्ण सहयोग करें। कई बार औरतों और मर्दों दोनों तरफ़ से कुछ शिकायतें आ जाती हैं। आने वाले मर्द तथा औरतें मुकम्मल सहयोग नहीं करते। इसी तरह प्रवेश द्वारों पर जहां स्कैनिंग वग़ैरा का इंतिज़ाम है वहां प्राय तो लाइनें लगती हैं, बड़े सब्र और धैर्य का मुज़ाहरा किया जाता है लेकिन कई बार किसी एक-दो के कारण से माहौल ख़राब भी हो जाता है। वहां हर एक को मुकम्मल तौर पर सब्र का मुज़ाहरा करना चाहिए। अगर थोड़ा सा वक़्त भी लग जाए तो कोई हर्ज नहीं है इस लाईन लगाने से बेहतर निकास हो सकता है

फिर जलसा गाह में बैठने वालों से मों हमेशा कहा करता हूँ कि जलसा के दौरान अपने दाएं बाएं नज़र रखें । इसी तरह चलते फिरते हुए भी अपने माहौल पर नज़र रखें । सैक्योरिटी के हवाले से इंतिज़ामीया जो भी हिदायत दे इस पर अनुकरण करने की पूरी कोशिश करें और सबसे बढ़कर यह कि जलसा की कामयाबी और अपने जलसा में आने के मक़सद को पूरा करने और हर शरारत करने वाले की शरारत से बचने के लिए स्थायी रूप से दुआ करते रहें। जमाअत की तरक़्क़ी हासिदों को हसद में बढ़ाती चली जा रही है। इसलिए दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान की ज़रूरत है। इन दिनों में पाकिस्तान में भी अहमदियों के हालात के बारे में दुआ करें वहां भी लगता है कि हालात दुबारा मुख़ालिफ़त की तरफ़ जा रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी अमन की ज़िंदगी प्रदान फ़रमाए। अल्लाह तआला उनको हर शरारत से महफ़ूज़ रखे। मुख़ालिफ़ीन के नए या पुराने मन्सूबों को नाकाम तथा नामुराद कर दे।

इस के इलावा भी जलसा में शामिल होने वालों को इस बात की भी याददहानी करवा दूं कि इस साल भी हमारे जो विभिन्न मर्कज़ी विभाग हैं आरकाई का विभाग है या रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ का है या मख़ज़न तसावीर है या दूसरे विभाग हैं उन्होंने अपनी नुमाइशों का एहतिमाम किया हुआ है और काफ़ी मालूमाती और इल्मी नुमाइशें होती हैं, इस को भी जो फ़ारिग़ वक़्त हो इस में देखने की कोशिश करें।

इस के इलावा ऐम टीए की तरफ़ से भी एक ऐलान है। ऐम टी ए इंटरनैशनल की तरफ़ से आज एक नई एप (app)लॉन्च (launch)होगी और जो स्मार्ट टीवी है। किसी भी देश में अब इस अप को डाउन लोड (download)कर के एल जी (LG) फिलिप्स (Philips) एमेज़ों वन फायर टीवी(Amazon Fire TV) सोनी (Sony) और एंड्राइड (Android) के टीवी सैटस पर डिश एंटीना के बिना भी एम टी ए के सारे चैनल्ज़ अर्थात ऐम टी ए वन (MTA1) एम टीए टू (MTA2) एम टी ए थ्री (MTA3) और एम टी ए अलअरबी और एम टी ए अफ़्रीक़ा देखे जा सकते हैं। इस के इलावा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अमरीका में एम टी ए पहले ही सेमसंग (Samsung) प्लेटफार्म पर मौजूद है। तो यह भी ऐलान था। अल्लाह के फ़ज़्ल से जो बाहर के रहने वाले हैं वे इस एप (App)से फ़ायदा उठा सकते हैं। अभी जुम्अ: के बाद में इस का लॉन्च (launch)भी कर दूँगा

अल्लाह तआला जलसा को हर लिहाज़ से बरकतों वाला फ़रमाए और आप सबको इस से भरपूर इस्तिफ़ा दे की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 23 अगस्त 2019 ई पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

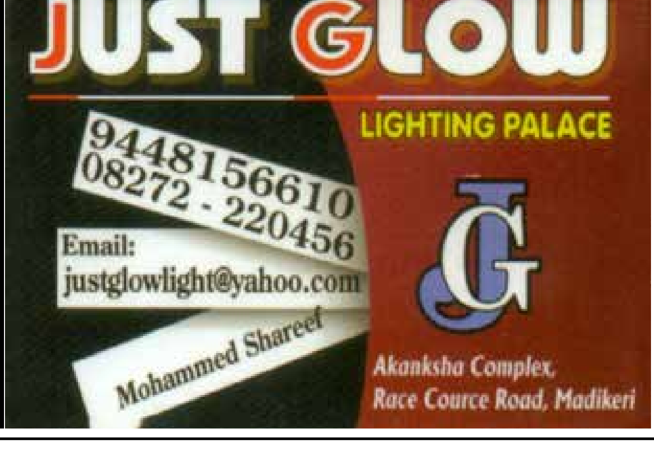

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

लोग ग्वेटामाला पहुंचे थे। यह सब भी हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए वहां मौजूद थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ हिला कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और होटल के अंदर तशरीफ़ ले गए। होटल में एक हाल नमाज़ों की अदायगी के लिए लिया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 4 बजकर 40 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार सवा पाँच बजे मस्जिद बैतुल अव्वल (ग्वेटामाला) के लिए रवानगी हुई। लगभग 35 मिनट के सफ़र के बाद 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद बैतुल अव्वल तशरीफ लाए जहां ग्वेटामाला के लोगों के अतिरिक्त मध्य और दक्षिण अमरीका के विभिन्न देशों से आए हुए वफ़दों ने हुज़ूर अनवर का भरपूर स्वागत किया और बच्चियों ने अपनी लोकल ज़बान में नज़्में पेश कीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और मिशन हाऊस के अंदर तशरीफ़ ले आए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद और मिशन हाऊस की इमारत का निरीक्षण फ़रमाया और रिहायशी हिस्सा भी देखा। मस्जिद के बाहरी हिस्सा में मार्की लगा कर औरत और मर्दों के लिए अलग अलग खाने का प्रबंध किया गया था और उन के लिए वहां बैठने की जगह तय्यार की गई थी। हुज़ूर अनवर ने इस बारे में पूछा। मस्जिद के बाहरी क्षेत्र में और बुनियादों के बारे में हुज़ूर अनवर ने जायज़ा लिया। अमीर साहिब ग्वेटामाला ने निवेदन किया कि निचले हिस्सा में पहले क्लीनिक को गेस्ट रुम में तबदील किया गया है। परामर्श है कि यहां पर नियमित तीन रिहायशी अपार्टमंट्स, एक एक दो-दो बेडरूम के बना दिए जाएं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ठीक है, इस का जायज़ा ले लिया जाए कि जो पहली बुनियाद है इस को गिरा कर बनाना है या उसको रख कर उसकी ही renovation कर के बनाने हैं। लंदन से फ़ाइज़ साहिब आकर जायज़ा ले लेंगे।

जमाअत ग्वेटामाला के मेम्बरों की सामूहिक मुलाक़ात

*निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां जमाअत ग्वेटामाला के लोगों की हुज़ूर अनवर के साथ सामूहिक मुलाक़ात थी। उनकी संख्या एक सौ के लगभग थी जिनमें 44 मर्द और 46 औरत थीं और बाक़ी बच्चे थे।

*इसके अतिरिक्त मैक्सीको का इलाक़ा Chiapa जो ग्वेटामाला के बॉर्डर के साथ लगता है और यहां ग्वेटामाला के द्वारा जमाअत स्थापित हुई थी, यहां के अहमदी लोगों, नौ मुबाईन भी इस मुलाक़ात में शामिल थे। उनकी संख्या 32 थी। ये लोग हज़ार मील से अधिक का बड़ा लंबा सफ़र तय करके पहुंचे थे। ये लगभग सभी वे लोग थे जो अपनी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की सौभाग्य पा रहे थे।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन सबसे पूछा कि क्या हाल है? जिस पर उन्होंने जवाब दिया अल्हम्दु लिल्लाह। हुज़ूर अनवर के पूछने पर कि कहाँ कहाँ से आए हैं। इस पर अमीर साहिब ग्वेटामाला ने निवेदन किया कि ग्वेटामाला के विभिन्न इलाक़ों से हैं। जहां पिछले सालों में बैअतें हुई हैं, वहां से भी आए हैं। इसी तरह मैक्सीको के Chiapa के इलाक़ा से भी आए हैं।

*हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए बच्चों से पूछा कि क्या सब स्कूल जाते हैं जिस पर बच्चों ने निवेदन किया कि हम स्कूल जाते हैं। एक बच्चे ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि वह डाक्टर बनना चाहता है। एक बच्चे ने निवेदन किया कि वह चौथी क्लास में पढ़ता है। हुज़ूर अनवर ने बच्चों को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि आप सब ने पढ़ना है। किसी एक बच्चे ने भी बिना पढ़ाई के नहीं रहना। कोई डाक्टर बने, कोई इंजीनर, कोई वकील और कोई टीचर बने। प्रत्येक ने कुछ ना कुछ पढ़ना है।

*मैक्सीको से एक नौजवान छात्र जामिया अहमदिया कैनेडा में दाख़िल हुए हैं और जामिया के पहले साल में हैं। हुज़ूर अनवर ने उनसे पूछा कि उर्दू कितनी सीख ली है। महोदय ने निवेदन किया कि अभी थोड़ी थोड़ी सीखी है।

*हुज़ूर अनवर ने बच्चियों से मुख़ातब होते हुए फ़रमाया कि हमारी जमाअत में बच्चियां ज़्यादा शिक्षा प्राप्त करती हैं। आप सबने पढ़ाई में लड़कों से आगे निकलना है। बच्चों और बच्चियों में एक दूसरे से आगे निकलने में दौड़ लगनी चाहिए।

*दो गोइटे मालन बच्चियों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की सेवा में फूल पेश किए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जज़ाकम अल्लाह।

*एक नई बैअत करने वाले अहमदी दोस्त ने सवाल किया कि नमाज़ किस तरह अच्छे तरीक़ा से अदा की जा सकती है। इस के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: नमाज़ पढ़ते हुए यह ख़्याल रखें कि हम ख़ुदा के सामने खड़े हैं। ख़ुदा हमें देख रहा है। इसलिए विनम्रता के साथ नमाज़ के लिए खड़े हों और जो शब्द दोहरा रहे हों वह भी समझ कर दोहराएँ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया सूरत फ़ातिहा याद करें। इय्याक नअ्बुदु वा इय्यका नस्तईन बार-बार दुहराया करें कि हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरी ही मदद चाहते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जब नमाज़ पढ़ रहे हो तो तुम यह ख़्याल रखो कि तुम ख़ुदा तआला को देख रहे हो या कम से कम ख़ुदा तुम्हें देख रहा है। जब यह ख़्याल हो जाएगा कि ख़ुदा मुझे देख रहा है तो फिर विनम्रता पैदा होगी और नमाज़ की तरफ़ ध्यान भी होगा।

*एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने निवेदन किया कि अल्लाह तआला अगर हमें बेटा या बेटी प्रदान फ़रमाए तो उसका कौन सा इस्लामी नाम रखना चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जो इस्लामी नाम पसंद आए रख लें। मुहम्मद नाम रखना है तो रख लें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: असल यह दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा तआला नेक और सालिह औलाद प्रदान फ़रमाए। जो ख़ुदा के हुक़ूक़ और बंदों के हुक़ूक़ अदा करने वाली हो। बहुत सारे बच्चे पैदा होते हैं। यहां ग्वेटामाला में भी और दूसरी जगहों में भी तो बहुत बच्चे बिगड़ जाते हैं, ख़राब कामों में पड़ जाते हैं, नशे में पड़ जाते हैं, फिर जुर्मों वाले होते हैं और जेलों में चले जाते हैं। इसलिए हमेशा ख़ुदा तआला से यह दुआ करें कि ख़ुदा तआला जो भी औलाद दे नेक और सालिह औलाद हो।

*एक छात्र ने निवेदन किया कि वह जामिआ कैनेडा या जामिआ यू के में जाना चाहता है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर मुरब्बी बनना चाहते हो तो फिर एक फ़ैसला करो और इस पर स्थापित रहो। अगर जामिआ अहमदिया जाना चाहते हो तो फिर जामिआ अहमदिया कैनेडा जाओ। जामिआ कैनेडा को नियमित एजूकेशनल यूनिट, एक शैक्षिक संस्था का स्टेटस मिला हुआ है। इसलिए तुम कैनेडा जा सकते हो। लेकिन यू.के नहीं जा सकते। यू.के जामिआ के पास अभी ऐसा स्टेटस नहीं है। कैनेडा या गाना यह दो choices हैं। किसी एक में जा सकते हो।

*एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने सवाल किया कि एक अच्छा मुसलमान बनने के लिए कौन सी चीज़ ज़रूरी है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप ख़ुदा तआला से कोई भी कर्म छिपा नहीं सकते। लोगों से छिपा सकते हो। जब भी कोई काम करें तो यह याद रखें कि ख़ुदा तआला हमें देख रहा है। अल्लाह तआला ने जो बुनियादी हुक्म दिए हैं उन पर अनुकरण करो, ख़ुदा की इबादत करो, अच्छे अख़लाक़ अपनाओ, लोगों के हक़ अदा करो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिल्ली अल्लाह अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मुसलमान वह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे लोग महफ़ूज़ रहें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एक बार हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि मैं अच्छा अहमदी बनने के लिए किया करूँ और क्या ना करूँ? तो इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने मुझे इल्हाम से फरमाया है तुम्हें भी बता देता हूँ कि ख़ुदा तआला से डरो और सब कुछ करो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अत: जो ख़ुदा तआला से डरेगा वह ग़लत काम नहीं कर सकता। वह एक अच्छा मुसलमान बन जाता है। प्रिय को नसीहत करते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जामिआ में अपनी शिक्षा पर ध्यान दो, धार्मिक शिक्षा सीखो, पाँच नमाज़ें नियमित पढ़ो और बाजमाअत पढ़ो। फ़ज्र से पहले कम अज़ कम से कम नफ़ल नियमित पढ़ो और इस की मुस्तक़िल आदत डालो। उर्दू ज़बान सीखने के लिए जमाअत के किसी रिसाला से कोई एक सफ़ा पढ़ो। हफ़्तरोज़ा अलफ़ज़ल है, इस में से कोई पैराग्राफ़ पढ़ो। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की किताबें हैं, जो आसान उर्दू में हैं वे पढ़ो, दैनिक सोने से पहले मल्फ़ूज़ात का एक सफ़ा पढ़ा करो।

*ग्वेटामाला के एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने निवेदन किया कि हमारे लिए दुआ करें, हमारी मदद करें, हम अंधेरों में पड़े हुए हैं, ख़ुदा हमको हिदायत दे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ख़ुदा तआला ने आपको हिदायत दी है नूर की तरफ़, रोशनी की तरफ़ लेकर आया है। अब आपका काम है कि यह पैग़ाम दूसरों तक पहुंचाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो अपने लिए पसंद करो वे दूसरों के लिए भी पसंद करो। आपने अपने लिए इस्लाम को पसंद किया है अब यह अहमदियत का पैग़ाम दूसरों को भी पहुंचाएं। अल्लाह तआला आपको तौफ़ीक़ दे कि आप इस काम को सरअंजाम दे सकें।

*एक नई बैअत करने वाले अहमदी औरत ने कहा कि मैं आपका शुक्रिया अदा

करना चाहती हूँ। यहां अमरीका से डाक्टरज़ आते हैं और जमाअत के मैडीकल कैंप लगते हैं और एक स्कूल भी खुला हुआ है। यहां बहुत ज़रूरत है। इस पर अमीर साहिब ग्वेटामाला ने निवेदन किया कि ह्यूमैनिटी फ़रस्ट अमरीका के तहत मसरूर स्कूल जारी है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: स्कूल को जारी रखें। इसी तरह फ़रमाया कि हम यह सेवा कर रहे हैं। जहां भी हमारे लिए मुम्किन होता है हम यह सेवा करते हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कादियान में बहुत से मरीज़ों को देखा करते थे और दवा दिया करते थे। ग़रीब औरतें जमघट्टा की सूरत में आ जाती थीं। आप उनका ईलाज करते थे। किसी ने आप से निवेदन किया कि इस तरह तो आप का बहुत सा वक़्त उन लोगों के लिए खर्च हो जाता है। इस पर आप ने फ़रमाया यह ग़रीब लोग हैं। यहां ईलाज की ज़रूरत रहती है। क़रीब कोई दवाख़ाना नहीं है। इसलिए मैं दवाईयां मंगवा कर रखता हूँ जो उनके ईलाज के लिए काम आ जाती हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यही काम है जो हमने भी जारी रखना है और हम हर जगह यह कर रहे हैं और हम और भी स्कूल और हस्पताल खोलेंगे।

*एक औरत ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि हुज़ूर हमारे देश तशरीफ़ लाए हैं। आज मेरा बेटा आ नहीं सका। इस को काम से छुट्टी नहीं मिल सकी। उस ने कम्पयूटर साईंस किया हुआ है। मेरी इच्छा है कि वह भी जामिआ में दाख़िल हो। इस पर हुज़ूर अनवर ने औरत को क़लम प्रदान फ़रमाया और फ़रमाया कि यह अपने बेटे को दे देना।

*एक औरत ने निवेदन किया कि हुज़ूर हम औरतों के लिए कोई नसीहत फ़रमाएं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरत को बहुत बड़ा स्थान दिया है। एक तो औरत गर्भ के समय में तकलीफ़ें उठाती है। गर्भ का समय तकलीफ़ का वक़्त होता है। फिर पैदाइश के बाद बच्चे पालना, उस का यह समय मुश्किलें और तकलीफ़ बर्दाशत करते हुए गुज़रता है। इसलिए बच्चे का फ़र्ज़ बन जाता है कि वह अपनी माँ की सेवा करे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत तक पहुंचने के लिए बच्चों को अपनी माँ की सेवा करनी चाहिए। बच्चे की पैदाइश के बाद उस की सबसे ज़्यादा सेवा माँ कर रही होती है। इसलिए माँ को यह मुक़ाम दे दिया और बच्चे को हुक्म दे दिया कि माँ की सेवा करो ताकि जन्नत प्राप्त कर सको। दूसरी तरफ़ माँ पर यह ज़िम्मेदारी डाल दी कि तुम्हारे क़दमों के नीचे जन्नत उस वक़्त बन सकती है जब तुम सही तरह बच्चों की तर्बीयत करोगी। माँ की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि बच्चों की नेक तर्बीयत हो, बच्चों को बुरे माहौल से बचाया जाए। जब अहमदियत क़बूली कर ली है तो बच्चों को धर्म सिखाएँ, उनको सही आबिद बनाएँ और उच्च अख़लाक़ वाला बनाएँ। एक घटना है जिस का ज़िक्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी किया है। एक बच्चा बचपन में चोरियां करता था। फिर चोरी करना उस की आदत बन गई और बड़ा हो कर डाकू बन गया और फिर इस ने क़तल करने शुरू करदिए। आख़िर वह पकड़ा गया और उसे फांसी की सज़ा मिली। सज़ा से पहले इस से पूछा गया कि तुम्हारी आख़री इच्छा किया है? इस ने कहा कि मेरी आख़री इच्छा यह है कि मैं अपनी माँ की ज़बान चूसना चाहता हूँ। प्यार करना चाहता हूँ। अत: माँ को बुलाया गया और लड़का माँ के क़रीब हुआ और इस ने इस ज़ोर से ज़बान काटी कि दो टुकड़े हो गई। इस पर लोगों ने उसे कहा तुम ज़ालिम इन्सान हो। तुम ने सारी उम्र ज़ुलम किए और अब फांसी लगने लगे हो तो माँ को दुख देकर जा रहे हो। इस पर इस ने कहा कि मैंने अपनी माँ की ज़बान इसलिए काटी है कि जब मैं चोरियां किया करता था और लोग शिकायत लेकर मेरी माँ के पास आते थे तो माँ मेरी पर्दापोशी करती थी और मुझे कहती थी कि कुछ नहीं हुआ। अगर उस वक़्त इस ने मुझे समझाया होता और मेरी सही तर्बीयत की होती तो आज मैं डाकू ना बनता और फांसी ना चढ़ता। मैंने अपनी माँ की ज़बान को इसलिए काटा कि यह तर्बीयत करने वाली नहीं थी बल्कि मेरी ज़िन्दगी बर्बाद करने वाली थी। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अहमदी माताओं को ऐसा बनना चाहिए कि अपने बच्चों की अच्छी तरह तर्बीयत करके उनको नेक और आबिद बनाएँ जो देश की सेवा करने वाले हों। आपकी नौजवान नस्ल ने इस देश की तरक़्क़ी के लिए भूमिका अदा करनी है।

*आख़िर पर Chiapa मैक्सीको से आने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि वह आज बैअत करना चाहती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बैअत फ़ार्म भरो और बैअत कर लो। इसी तरह हुज़ूर अनवर ने अमीर साहिब ग्वेटामाला से फ़रमाया कि नमाज़ मग़रिब तथा इशा के बाद बैअत का प्रोग्राम रखना है तो रख लें।

मुलाक़ात के अन्त पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह आप सब का हाफ़िज़ तथा नासिर हो।

बेलीज़ के वफ़्द की मुलाक़ात

इस के बाद देश बेलीज़ (Belize) से आने वाले वफ़्द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। बेलीज़ से 21 लोगों पर आधारित वफ़्द ग्वेटामाला पहुंचा था।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने एक नौ अहमदी औरत से पूछा कि अहमदियत क़बूल कर के आपने क्या प्राप्त किया है? आपको ख़ुदा तआला मिला है? क़ुरआन करीम का इलम मिला है? धर्म मिला है? महोदया ने निवेदन किया कि जमाअत ज़रूरत मंद लोगों की जो सेवा और मदद कर रही है। उसने भी मुझे बहुत प्रभावित किया है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम हर जगह ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं। मानवता की सेवा के लिए हमारे विभिन्न प्रोग्राम जारी हैं।

*एक औरत ने निवेदन किया कि मैं दो साल पहले अहमदी हुई हूँ। अब मैं दूसरों को जमाअत की तब्लीग़ कर रही हूँ, पैग़ाम पहुंचा रही हूँ, अहमदिया कम्यूनिटी बड़ी अच्छी कम्यूनिटी है। लेकिन कुछ लोगों की जमाअत के बारे में नकारात्मक सोच भी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मीडिया ने इस्लाम को बदनाम किया हुआ है और इस्लाम को बुरे रंग में पेश किया जा रहा है। इस वजह से कुछ लोग नकारात्मक सोच रखते हैं।

*एक अहमदी औरत ख़दीजा साहिबा भी वफ़्द में शामिल थीं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप तो जलसा सालाना यू के पर आई थीं। इस पर महोदया ने निवेदन किया कि साल 2015 ई में जलसा यू.के पर आई थी। महोदया ने निवेदन किया कि मैं लजना में तब्लीग़ की इंचार्ज हूँ। औरतें बैअत करती हैं। अहमदी हो रही हैं। लेकिन उन के लिए कुछ मुश्किलें हैं, उनके कुछ समस्याए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बेलीज़ में तो अहमदियत क़बूल करने वाले सब स्थानीय हैं। वहां तो कोई पाकिस्तानी नहीं है। तो फिर उनको अपने में शामिल करने और जज़ब करने में क्या समस्या है? हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उन औरत को इस्लाम की शिक्षा बताएं। जो उन की समस्याएं हैं इस्लाम की शिक्षा के अनुसार हल करें। मुसलमान होने का अर्थ किया है। ख़ुदा तआला के क़रीब हूँ, उच्च अख़लाक़ अपनाएं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपको बहुत ज़्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। उनकी तर्बीयत करनी पड़ेगी और ट्रेनिंग करनी पड़ेगी। हम दुआ करेंगे आप तब्लीग़ करें और मज़बूत अहमदी बनाएँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तब्लीग़ तो एक निरन्तर जिहाद है। बड़ी मेहनत और कोशिश की ज़रूरत है। एक रात में दिल नहीं बदल सकते, किसी का ज़हन नहीं बदला जा सकता। एक लंबी कोशिश है। ख़ुदा तआला हर अहमदी की मदद फ़रमाए, सहायता फ़रमाए।

*हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बेलीज़ से औरत ज़्यादा आई हैं, मर्द नहीं आए। अपने खाविंदों और लड़कों नौजवानों को भी लाना था। उनके ईमान भी मज़बूत करें।

*एक औरत ने निवेदन किया कि वे पिछले चार साल से अहमदी हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आइन्दा साल जलसा सालाना यू के पर आने का प्रोग्राम बनाएँ। महोदया ने निवेदन किया कि हमारी दरख़ास्त है कि जब हमारी बेलीज़ की मस्जिद की पूर्णता हो जाए तो हुज़ूर उस के उद्घाटन के लिए आएं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। इंशा अल्लाह तआला जब पूर्णता हो जाएगी तो मैं आने की कोशिश करूँगा। *इस के बाद बेलीज़ की चार स्थानीय बच्चियों ने कोर्स की सूरत में नज़म हे दस्ते क़िबला नुमा ला इलाहा इल्लल्लाह तरन्नुम के साथ पढ़ी। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए MTA वालों को बुलाया कि आकर उस की रिकार्डिंग करें।

फ़रमाया: आपने जिस तरीक़े से पढ़ा है मुझे पसंद आया है। ख़ुदा बरकत दे। इसी तरह फ़रमाया अब आप इस नज़म का अर्थ भी सीखें और अपने मिशनरी को कहीं कि वह आपको इस का अर्थ सिखाए।

*कैनेडा में रीजाइना जमाअत में जिन लोगों ने वहां की मस्जिद की पूर्णता की थी वो बेलीज़ की मस्जिद के लिए एक नक़्शा तय्यार कर के साथ लाए थे। उन्होंने हुज़ूर अनवर की सेवा में वह नक़्शा पेश किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप यह नक़्शा लंदन भिजवा दें। वहां देखकर बताएँगे कि क्या करना है।

*आख़िर पर वफ़्द के सारे मेम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

*बेलीज़ के वफ़्द का हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात का यह प्रोग्राम साढ़े सात बजे तक जारी रहा।

मैक्सीको, हंडूरस, इक्वाडोर, पानामा, पेरागोवा कोस्टारीका, ईल

सल्वाडोर के वफ़ूद की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार निम्नलिखित देशों से आने वाले वफ़ूद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात थी। मैक्सीको,हंडूरस, इक्वाडोर, पानामा, पेरागोवा, कोस्टारीका, ईल सल्वाडोर।

*मैक्सीको से 34 लोगों पर आधारित वफ़द आया था। वफ़द के मेम्बरों की अक्सरीयत नौ मुबाईन की थी। उनमें कुछ ऐसे लोगों भी थे जिन को तब्लीग़ की जा रही हैं। यह वफ़द मैक्सीको की तीन जमाअतों मैक्सीको सिटी,Queretaro और Meridaसे आया था। वफ़द की अक्सरीयत सड़क द्वारा 30 घंटों का सफ़र तय करके पहुंची थी।

*हंडूरस से 10 लोगों पर आधारित और इक्वाडोर से आठ लोगों पर आधारित वफ़द ग्वेटामाला पहुंचा था। जबकि पानामा और कोस्टारिका से तीन तीन लोगों पर आधारित वफ़द और ईल सल्वाडोर और पेरागोवा से चार चार लोगों पर आधारित वफ़द आया था और ये सब लोग आज की इस मुलाक़ात में शामिल थे।

*एक बच्ची ने निवेदन किया कि फ़ैमिली लाईफ़ बड़ी अहम होती है। कुछ औरत घर में वक़्त नहीं दे सकतीं। मैं शादीशुदा हूँ, पढ़ भी रही हूँ और जॉब (Job) भी करना चाहती हूँ। मेरे अभी बच्चे नहीं हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अभी तो बीवी की ज़िम्मेदारी है, माँ की नहीं पड़ी। अगर पढ़ना है तो पति से पूछना चाहिए। इस की इच्छा और रजामंदी भी शामिल हो ताकि घर के हालात अच्छे रहीं। इस पर महोदया ने निवेदन किया कि मेरे पति तो चाहेंगे कि मैं घर पर रहूं लेकिन मैं अपने पति की मदद करना चाहती हूँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जहां तक औरत की शिक्षा का सवाल है, औरत को ज़रूर शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए ताकि वह अपने बच्चों की सही तर्बीयत कर सके। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस्लाम में घरेलू सतह पर औरत की ज़िम्मेदारी है, औरत को ख़ुदा ने कहा है कि घर पर रहो और घर के काम करो, बच्चों को सँभालो और उनकी तर्बीयत करो। दूसरी तरफ़ मर्द को कहा है कि सारे घरेलू खर्चों की ज़िम्मेदारी अदा करो और बीवी बच्चों की जो ज़रूरतेंहैं वे पूरी करो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर मैडीकल प्रोफ़ैशन है तो इस में इन्सानियत की सेवा है। अगर कुछ समय जॉब करना पड़े और पति भी ख़ुश हो कि इन्सानियत की सेवा करो तो फिर जॉब करलो। यह समक्ष रहे कि पैसे नहीं कमाने बल्कि इन्सानियत की सेवा करनी है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस्लाम क़िनाअत चाहता है कि जो उपलब्ध है इस पर गुज़ारा करो। इन्सान की इच्छाए बढ़ती रहती हैं कम नहीं होतीं और कभी ख़त्म नहीं होतीं। इन बढ़ती हुई इच्छाओं को पूरा करने के लिए नौकरी करना यह ग़लत है। हाँ ज़रूरतों के लिए नौकरी करना ठीक है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि असल यह है कि आइन्दा के लिए एक ऐसी अच्छी नस्ल छोड़ें जो देश तथा कौम की सेवा करने वाली हो। अगर अहमदी माताएं अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझ लें कि नस्लों की तर्बीयत हो और वे शिक्षा प्राप्त करनेवाली हूँ तो अगले पच्चास साल में या बाद में वक़्त आएगा कि ऐसे देश जो ग्वेटामाला की तरह हैं, उनमें अहमदियत की वजह से तरक़्क़ी होगी। यह एक ऐसी ज़िम्मेदारी है कि सिर्फ अपनी नस्लों में ही नहीं बल्कि आइन्दा नस्लों में भी ट्रांसफ़र करने के लिए ज़रूरी है।

*पेरागोवा से आने वाले वफ़द के एक मैंबर ने निवेदन किया कि हमारा पेरागोवा में पहला जलसा सालाना होने वाला है। हुज़ूर हमारे जलसा के लिए दुआ करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

इक्वाडोर से आने वाले एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने सवाल किया कि हम अपने बच्चे के लिए किस तरह अच्छे माता पिता बन सकते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मेरे ख़ुत्बा जुम्अ: सुना करें, मैं प्राय माता पिता को उनकी ज़िम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाता रहता हूँ, जो नए और पुराने अहमदी हैं सब के लिए ज़रूरी है कि ख़िलाफ़त से जड़े रहें और मज़बूत सम्बन्ध की कोशिश करें। तर्बीयत के लिए सबसे बेहतरीन चीज़ नमूना है। जब तक घर में, अपने अख़लाक़ में, अपने कर्मों में, अपनी आदतों में नमूना स्थापित नहीं करेंगे, उस वक़्त तक बच्चों की सही तर्बीयत नहीं हो सकेगी। बच्चा बड़ा होता है और देखता है कि मेरी माँ के साथ मेरे बाप का सुलूक अच्छा नहीं है तो बच्चे की तर्बीयत पर इस का बुरा असर पड़ेगा। बाप कहता है कि सच बोलो, लेकिन अगर वह ख़ुद सच नहीं बोलता तो बच्चा कहेगा कि मेरी ग़लत तर्बीयत कर रहा है। ख़ुद तो कुछ और करता है और कहता है और मुझे कुछ और करने को कहता है। बच्चों की तर्बीयत के लिए ज़रूरी है कि माँ बाप का कर्म सही हो। उनकी अच्छी आदतें हों। अच्छे अख़लाक़ हों।

*पानामा से आने वाले एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। मैं बहुत बीमार था। Prostate की तकलीफ़ थी। हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआओं की दरख़ास्त करता रहा। अब मेरा ऑप्रेशन हो गया है, अब मैं सेहतमंद हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्हम्दुलिल्लाह। अल्लाह तआला ने शिफ़ा दी है।

*हंडूरस से आने वाले एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने निवेदन किया कि मुझे बैअत किए हुए एक साल हो गया है। घरवालों की तरफ़ से भी और मेरे साथियों की तरफ़ से भी मेरा विरोध है। मैं इंटरनेशनल ला पढ़ रहा हूँ। मेरी अभी शादी नहीं हुई। मैं उर्दू और अंग्रेज़ी ज़बान सीखना चाहता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

*Paraguay से वहां के डिप्टी मिनिस्टर आफ़ एजूकेशन Robert Cano साहिब तशरीफ़ लाए थे। महोदय डिप्टी मिनिस्टर आफ़ रीलीजन भी हैं। महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की सेवा में निवेदन किया कि इन के ग्वेटामाला आने का मक़सद Ministry of Education की तरफ़ से हुज़ूर अनवर की सेवा में एक ख़त पेश करना है कि हमारी वज़ारात तालीम भविष्य में जमाअत अहमदिया के साथ मिलकर काम करना चाहती है। अत: महोदय ने ख़ुद यह ख़त हुज़ूर अनवर की सेवा में पेश किया।

*एक नई बैअत करने वाले अहमदी ने सवाल किया कि आजकल भौतिकवाद बहुत ज़्यादा है। एक ईमान लाने वाला शख़्स किस तरह इस माहौल में अपने आपको बेहतर कर सकता है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ख़ुदा की तरफ़ झुको, इबादतों की तरफ़ ध्यान दो, इस्लामी शिक्षाओं पर चलने की कोशिश करो, अख़लाक़ के उच्च स्तर प्राप्त करो तो तभी ख़ुदा तआला की रज़ा पा सकते हो। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि मैं इसलिए आया हूँ कि बंदे को ख़ुदा के नज़दीक करूँ और जो दूरी पैदा हो चुकी है उसको ख़त्म करूँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप पांचों नमाज़ें इस तरह अदा करें कि अगर नमाज़ में ख़ुदा को नहीं देख रहे तो यह बात आपके सामने हो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है तो इस से विनम्रता पैदा होगी। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हर दिन इस बात का जायज़ा लेते हुए गुज़रना चाहिए कि मैंने क्या तरक़्क़ी की है। कौन सी बुराईयां छोड़ी हैं और कौन सी नेकियां धारण की हैं। धर्म की तर्जीहात होनी चाहिऐं। यही आप के लिए बेहतर है।

*मेक्सीको से आने वाले एक नौजवान ख़ादिम ने निवेदन किया कि वह क़ाइद मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया है। तब्लीग़ के हमारे कुछ प्रोग्राम हो रहे हैं, उन के लिए दुआ की दरख़ास्त है। हम ने वापसी का भी 28 से 30 घंटे का सफ़र तय करना है। इस के लिए भी दुआ की दरख़ास्त है। क़ुरआन करीम पढ़ने और समझने के लिए भी दुआ की दरख़ास्त है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ख़ुदा तआला आपकी सारी इच्छाएं क़बूल फ़रमाए और नेकियों में आगे बढ़ाए।

*क़ाइद ख़ुद्दामुल अहमिदया ने हुज़ूर अनवर की सेवा में मैक्सीको का झंडा पेश किया। हुज़ूर अनवर ने इस झंडे क्रो मेज़ पर मौजूद एक गिफ्ट बैग के कोने में खड़ा करके रखा और साथ फ़रमाया कि झंडा दिया है तो इस को खड़ा रखना चाहिए।

*मैक्सीको से आने वाले एक नई बैअत करने वाले अहमदी के सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आख़री दिनों में मसीह तथा महदी मबऊस होगा। तुम इस तक पहुंचना और उसे मिलना और मेरा सलाम उसे पहुंचाना। अत: जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार मबऊस हुए और मसीह तथा महदी होने का दावा किया तो लोगों ने आप को क़बूल ना किया और आप के ख़िलाफ़ फ़तवे जारी किए। आरम्भ में कुछ लोगों ने आपको क़बूल किया। फिर धीरे-धीरे संख्या बढ़ती रही। आज यह संख्या करोड़ों में दाख़िल हो चुकी है। धीरे-धीरे हम बढ़ रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमें उम्मीद है कि एक दिन मुसलमानों की बड़ी अक्सरीयत अहमदियत क़बूल करेगी। कब ऐसा होगा यह बता नहीं सकते लेकिन ज़रूर ऐसा होगा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं मूसवी मसीह के क़दमों पर आया हूँ। मूसवी मसीह का पैग़ाम तीन सदियों में फैला था। आप ने फ़रमाया कि तीन सौ साल नहीं गुज़रेंगे कि दुनिया की अक्सरीयत अहमदियत क़बूल कर लेगी। अभी तो 130 साल गुज़रे हैं। आप उम्मीद रखें। इंशा अल्लाह दुनिया क़बूल करेगी। इस वक़्त मुल्ला की तरफ़ से, जमाअत के विरोधियों की तरफ़ से हर जगह जमाअत की विरोधता है लेकिन हम अपना काम कर रहे हैं। इंशा अल्लाह एक दिन आप उस का नतीजा देखेंगे।

*आख़िर पर मैक्सीको की लजना और बच्चियों ने स्पेनिश ज़बान में ख़ुश-अल्हानी से एक नज़्म पेश की। इस के बाद सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

का अवसर प्राप्त किया। इस के बाद सवा आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। मुबल्लग़ीन किराम और कुछ स्थानीय लोगों की फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इन सभी ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

बैअत का आयोजन

*इस के बाद 8 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद में तशरीफ़ ले आए और नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करे पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद बैअत के आयोजन हुई। इस अवसर पर विभिन्न देशों से आने वाले सारे नौ मुबाईन और पुराने अहमदियों ने हुज़ूर अनवर के दस्त मुबारक पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त कियया। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुलावल ग्वेटामाला से रवाना हो कर 10 बजे अपनी रिहायश गाह Porta Hotel तशरीफ़ ले आए।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से निम्नलिखित क़ौमों के नौ मुबाईन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया। कोसटारीकन, पारा ग्वेन, मैक्सीकन, हीवनडरन, पनामीज़, इको वुड विरेन, ईल सल्वाडोरयन, गोइटे मालन,बेलीज़यन। ये सब वे क़ौमें हैं जिनके ख़ुशनसीब और सौभाग्य वाले लोग पिछले कुछ सालों में अहमदियत में दाख़िल हुए। सैंटर्ल अमरीका और साऊथ अमरीका के देशों की यह वे नई अक़्वाम हैं जो हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के चश्मा से तृप्त हुई हैं।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था: प्रत्येक क़ौम इस चशमा से पानी पीएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहां तक कि ज़मीन पर छा जाएगा।

(तजल्लियात इलाहिया, रुहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 20, पृष्ठ 409)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई की मिस्दाक़ इन नई क़ौमों के ये नौ मुबाईन आज अपनी ज़िन्दगियों में पहली बार हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्लेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात और दर्शन का सौभाग्य पा रहे थे और आज ये लोग हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चश्मा से तृप्त हो रहे थे। आज का दिन उन लोगों की ज़िन्दगी में तारीख़ी दिन था। उनके एहसासात और भावनाएं नाक़ाबिल वर्णन हैं। कइयों ने अपने दिल की भावनाओं को प्रकट किया है।

नौ मुबाईन के ईमान वर्धक विचार

मैक्सीको के एक नौ मबाइअ इवान फ्रांसिस्को साहिब बयान करते हैं: मैंने एक ईमान से भरे हुए व्यक्तित्व को देखा है जो कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से मेरे लिए हादी के तौर पर और मेरे ईमान को बढ़ाने के लिए भेजे गए हैं। जब हम ने ख़लीफतुल मसीह के हाथ पर बैअत की तो वह एक ऐसा लम्हा था जो कि शब्दों में नहीं बयान किया जा सकता। इस लम्हे मुझे जिस्मानी तौर पर ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा सारा जिस्म गर्म हो गया और मेरे पसीने छूटने लगे और ऐसा लगा जैसे एक करंट मेरे जिस्म में से दौड़ रहा है और जाते-जाते अपने साथ मेरे सारी गुनाह भी ले गया। ख़ुदा तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हमें ख़लीफतुल मसीह प्रदान किया है। मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिए अच्छाई की तरफ़ बढ़ने का पहला क़दम है और मेरे अंदर एक तब्दीली लाएगा।

मैक्सीको से इरलानदा मेरिया साहिबा अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: मेरी हमेशा से इच्छा थी कि मैं प्यारे हुज़ूर से मिलों। मैं अपने आँसूओं को रोक नहीं सकी। जब मैंने हुज़ूर को देखा तो मुझे बहुत सुकून महसूस हुआ और मैं यक़ीन नहीं कर सकती थी कि हुज़ूर अनवर मेरे सामने मौजूद हैं।

मैक्सीको से आने वाली एक नई बैअत करने वाले अहमदी औरत लाओरा माटीलदे साहिबा (Laura Matilde) बयान करती हैं: मेरे इस ग्वेटामाला के सफ़र के बाद एक बात मेरे दिल में दृढ़ हो गई है कि जहां ख़ुदा तआला मुझे चाहता है मैं वहीं पर हूँ। मेरे दिल में इस बारे में कोई शक नहीं कि मैं रुहानी और भावनात्मक तौर पर बहुत इत्मीनान और अमन महसूस कर रही हूँ। दूसरे देशों के अहमदी बहन भाईयों से मिलकर भी ईमान ताज़ा हुआ और इस से भी बढ़कर प्यारे हुज़ूर के पीछे नमाज़ें अदा कर के मेरा ईमान अल्लाह तआला और अहमदियत यानी वास्तविक इस्लाम में और भी दृढ़ हुआ है। मैं बहुत अमन महसूस कर रही हूँ और मेरी इच्छा है कि मैं इस रास्ता पर स्थापित रहूं। अल्लाह करे कि ऐसा ही हो।

वीसीनते बरीवनीस साहिब (Vicente Briones) लिखते हैं: मेरा सम्बन्ध मैक्सीको सिटी जमाअत से है। जब मुझे बताया गया कि मुझे गोवटेमाला जाने का अवसर मिल रहा है तो मैं बहुत ख़ुश हुआ मगर यह सुनकर कि वहां पर प्यारे ख़लीफ़ा से मुलाक़ात होगी मेरी ख़ुशी और भी बढ़ गई। जब हमारी हुज़ूर से मुलाक़ात हुई तो मैं बहुत ख़ुश हुआ क्योंकि मुझे उन के पास काफ़ी देर बैठने का अवसर मिला। मैंने थोड़ा समय पहले मैक्सीको सिटी में बैअत की थी मगर हुज़ूर के हाथ पर बैअत करना मेरी ज़िन्दगी की एक ऐसी घटना थी जिसको मैं शब्द में बयान ही नहीं कर सकता। मैंने अपने आँसूओं को पूंछते हुए कहा कि यह मेरी ज़िन्दगी का सबसे हसीन दिन था।

मैक्सीको से आने वाले एक नौ मबाइअ (Miguel Angel साहिब बयान करते हैं: मैं दिल की गहराई से हुज़ूर का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि उन्होंने हमें इस बात की इजाज़त दी कि हम उन के साथ कुछ क्षण गुज़ार सकें। इसी तरह ग्वेटामाला की जमाअत में बहुत सारे नए दोस्त बनाए हैं। सच यह है कि इस्लाम अहमदियत में कोई border नहीं है इसी तरह किसी किस्म की लकीर नहीं है जो हमें अलग कर सके। कोई देश की लकीर हमें अलग नहीं कर सकती। हम सब भाई भाई हैं। अगर फ़र्क़ होता है तो ज़बान का, वर्ना हम सब भाई हैं। प्यारे हुज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ते हुए भी बेशक हम से 15 विभिन्न देशों से आए हुए लोग थे मगर हम एक थे और एक ख़लीफ़ा के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे।

मैक्सीको की एक नई बैअत करने वाले अहमदी क्लारा ख़वाना गोनज़ालीस रामीरीस साहिबा (Clara Juana Gonzalez Ramirez)बयान करती हैं: मैक्सीको के वफ़्द के साथ हुज़ूर अनवर की मुलाक़ात और बैअत के आयोजन में हिस्सा लेने के बारे में निवेदन करना चाहती हूँ कि मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जो मेरी भावनाओं को प्रकट कर सकें। मैं बहुत ख़ुश हूँ और बहुत मुतमइन हूँ और समझती हूँ कि बैअत के आयोजन और हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात के द्वारा मेरा ईमान और अधिक मज़बूत हुआ है क्योंकि मेरी ज़िन्दगी में मेरे इर्द-गिर्द ऐसे लोग हैं जो इस्लाम के मज़हब को नहीं समझते और मेरे से दूर रहना चाहते हैं और चाहते हैं कि मैं जमाअत के साथ रहूं या उन के साथ रहूं तो मैंने फ़ैसला किया है कि मैं जमाअत के साथ रहना चाहती हूँ। मैं उम्मीद करती हूँ कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मैं इस्लाम की शिक्षाओं को सीखती रहूं और जमाअत की सेवा भी करती रहूं। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया को बढ़ाता जाए। आमीन।

हंडूरस देश से आने वाली एक नौ मबाइअ दिना डलमी रियो इस साहिबा अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: यह पहली बार था कि मुझे अपने देश से बाहर जाने का अवसर मिला और इतना लंबा सफ़र धारण करना पड़ा। हमें हंडूरस से ग्वेटामाला जाते हुए 16 घंटे लगे। यद्यपि हमें सफ़र में विभिन्न तकलीफों का सामना करना पड़ा लेकिन जैसे ही जमाअत की मस्जिद और हज़रत ख़लीफतुल मसीह को देखा तो सफ़र की मुश्किलें का एहसास फ़ौरन ज़हन से उतर गया। जमाअत के बहुत ही प्यारे और अच्छे लोगों के साथ मिलने का अवसर मिला जिन्होंने मेरे साथ अपनी फ़ैमिली के मैंबर की तरह सुलूक किया। अमरीका से आई हुई एक अहमदी औरत ने मुझ से कहा कि मैं उनकी बेटी जैसी हूँ। इस सफ़र का सबसे बेहतरीन हिस्सा ख़लीफ़ा वक़्त के साथ मुलाक़ात थी। मैं हज़रत ख़लीफतुल मसीह से ज़ाती तौर पर कोई बात नहीं कर पाई थी क्योंकि ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं एक अलग ही दुनिया में हूँ और मैं चाहती थी कि बस बैठ कर ख़लीफ़ा वक़्त को देखती रहूं और उनकी बातें सुनती रहूं। एक ऐसा तजुर्बा था जो वर्णन से बाहर है। इस सफ़र के दौरान जमाअत की शिक्षाओं के ज़िमन में मेरे इलम में और अधिक इज़ाफ़ा हुआ। जब ख़लीफ़ा वक़्त मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर अनवर के सामने एक नज़्म पढ़ने का भी अवसर मिला। इसी तरह सामूहिक मुलाक़ात के दौरान भी नज़्म पढ़ने का अवसर मिला।

हंडूरस से आने वाले मनोलो होज़े इसकोतो साहिब जो कि एक टीवी रिपोर्टर हैं अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं: यह दौरा मेरे लिए एक निहायत ही ख़ुश करने वाला तजुर्बा था। मुझे जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के अक़ीदों और मानव सेवा की कोशिशों के बारे में और अधिक मालूमात प्राप्त करने का अवसर मिला। इस बार नासिर हस्पताल का उद्घाटन किया गया जिसके द्वारा हज़ारों ग़रीबों की मदद की जाएगी। ख़लीफ़ा वक़्त के विचारों से आगाही प्राप्त करना एक अजीब और मुनफ़रिद तजुर्बा होता है। ख़लीफ़ा वक़्त के पैग़ाम का मर्कज़ी नुक़्ता हमेशा अमन और विश्वव्यापी भाईचारा होता है। ख़लीफ़ा वक़्त लोगों के ज़ेहनी स्तर और सोच के अनुसार बात करते हैं और मुसलमानों से बारे में समाज में स्थापित बुरे प्रभावों को दूर करते हैं।

एडविन अरमानदो मोनतवया साहिब जो कि हंडूरस जमाअत के मैंबर ख़ुद्दामुल अहमदिया हैं अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहते हैं: मेरे नज़दीक ख़लीफ़ा वक़्त के सामने बैठना, आपके पैग़ाम को सुनना और इस पर अनुकरण करना ताकि अपने ईमान में तरक़्क़ी कर सकें, एक निहायत ही दिलरुबा तजुर्बा था। इस दौरा की सबसे अच्छी बात यह लगी कि ख़लीफ़ा वक़्त के साथ मुलाक़ात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर ने शफ़क़त करते हुए मुझे एक क़लम भी प्रदान फ़रमाया। मुझे उम्मीद है कि ख़लीफ़ा वक़्त जल्द हमारे देश हंडूरस भी तशरीफ़ लाएँगे। ख़लीफ़ा वक़्त निहायत हिक्मत भरे अंदाज़ में कलाम करते हैं। जब आप किसी सवाल का जवाब देते हैं तो बहुत अच्छा हिकमत वाला और संक्षिप्त जवाब देते हैं। दुआ है कि अल्लाह तआला हमेशा ख़लीफ़ा वक़्त की सहायता तथा समर्थन फ़रमाए ।

सहर चौधरी साहिबा जो कि हंडूरस में मुतय्यन जमाअत के मुबल्लिग़ की पत्नी हैं वफ़द के सफ़र के बारे में लिखती हैं: हुज़ूर अनवर को देखने के लिए हमारे वफ़द का ग्वेटामाला का सफ़र ऐसा था जो मैं कभी नहीं भूल सकती। यह एक तारीख़ी अवसर था जिसका हिस्सा बनने की हमें तौफ़ीक़ मिली। अलहमदु लिल्लाह। हंडूरस के वफ़द में मेरे और मेरे पति के अतिरिक्त दो मेम्बर जमाअत और एक रिपोर्टर भी शामिल थे। ग्वेटामाला के सफ़र के दौरान रास्ता में कुछ मुश्किलें भी पेश आईं। रास्ता के लिए हम जिसका सहारा ले रहे थे वह हमें एक ऐसे रास्ता से लेकर गया जो पहाड़ी था और सड़क कच्ची और निहायत ख़तरनाक थी जिस पर गाड़ी को पहाड़ से गिरने से बचाने के लिए किसी किस्म का हिफ़ाज़ती प्रबंध नहीं किया गया था। इस दिन अल्लाह तआला ने हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाते हुए हमें इस ख़तरनाक अवस्था से बचाया।

इस से भी ज़्यादा हैरत-अंगेज़ यह बात थी कि जो 2 नौ मुबाईन हमारे साथ थे बार-बार यही कह रहे थे कि फ़िक्र ना करो अल्लाह हमारे साथ है, हम अल्लाह की राह में जा रहे हैं। हम हुज़ूर अनवर की आने से एक दिन पहले ग्वेटामाला पहुंचे और हुज़ूर के आने के इंतिज़ार में यह दिन हमारी ज़िन्दगी का सबसे लंबा दिन मालूम हो रहा था। दो दिन जब हुज़ूर ग्वेटामाला में मौजूद थे निहायत ही बरकतों वाले दिन थे। हम सब निहायत ख़ुशनसीब हैं कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के इक़्तिदा में नमाज़ें पढ़ने का अवसर मिला। बैअत करने की तौफ़ीक़ प्रदान हुई। नासिर हस्पताल की उद्घाटन आयोजन और इस तारीख़ी अवसर में शिरकत की तौफ़ीक़ मिली। हुज़ूर अनवर का ख़िताब निहायत प्रभावित करने वाला था जिसका मर्कज़ी नुक़्ता यह था कि वास्तविक तौर पर इन्सानियत और भाईचारा का क्या अर्थ है और वास्तविक मुहब्बत और हमदर्दी क्या है।

इक्वाडोर देश के एक नई बैअत करने वाले अहमदी अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं: ख़लीफ़ा वक़्त की मौजूदगी में मुझे एक नादिर ख़ज़ाना प्रदान हुआ और रूहानियत, अमन, ख़ुशी और मुसर्रत के भावनाएं मेरे अंदर समा गई हैं और मुझे बहुत सुकून प्राप्त हुआ। बैअत के दौरान जब आपने अपना मुबारक हाथ मेरे हाथ पर रखा तो यह एक ऐसा सौभाग्य था जो मुझे इस से पहले कभी नसीब ना हुआ था।

इक्वाडोर से एक मैंबर लजना इमा अल्लाह जो लगभग एक साल पहले अहमदी हुई थीं उनको पहली बार हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर मिला, वह कहती हैं: ग्वेटामाला का सफ़र मेरे और मेरे बेटे के लिए निहायत ख़ुशगवार था। जब हमने पहली बार हुज़ूर अनवर को देखा तो यह हमारे लिए एक ख़ास अवसर था क्योंकि इस से हमें अमन, मुहब्बत और सब्र नसीब हुआ और हमें ख़लीफ़तुल मसीह की ज़ात में एक इलाही नूर नज़र आया। फिर मुलाक़ात के दौरान जब मेरे बेटे ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह से हाथ मिलाया तो हमें बहुत ख़ुशी हुई और हम उसे अपने लिए एक ख़ुशनसीबी और बरकत का कारण समझते हैं। इक्वाडोर वापसी का सफ़र हमारे लिए बहुत दुख देने वाला होगा क्योंकि हमें अपने अहमदी बहन भाई और हमारे महबूब ख़लीफ़ा बहुत याद आएँगे। हम उम्मीद करते हैं कि जल्द हम दुबारा अपने ख़लीफ़ा को देखने का शरफ़ प्राप्त करेंगे।

इक्वाडोर से आने वाले एक पत्रकार बयान करते हैं: ख़लीफतुल मसीह से मुलाक़ात मेरे लिए एक अलग तजुर्बा थी और मैं ऐसे भावनाओं से भरा था जिन्हें बयान करना मुश्किल है। मेरे पास वे शब्द नहीं हैं जिनसे मैं अपने एहसासों को बयान कर सकूं। मैं बहुत उम्मीदों के साथ ख़ुदा के बंदे ख़लीफतुल मसीह को मिलने गया था। सिर्फ उनके दर्शन से ही मैं सुकून वाला हो गया और एक अमन की हालत मुझ पर छा गई। ऐसा महसूस हो रहा था कि यह वक़्त और जगह इस क़दर अहम हैं कि आइन्दा कभी मुझे नसीब नहीं होंगे। ख़लीफ़ा का पैग़ाम हमेशा हमें सोचने पर मजबूर करता है कि लोग इन्सानियत की सेवा के लिए क्या कर रहे हैं। ख़लीफ़ा का पैग़ाम हमेशा कमज़ोरों की मदद, उनकी शिक्षा तथा भलाई और समाज में न्याय की शिक्षा देता है। ख़लीफ़ा के ख़ुत्बे हमेशा हिक्मत से भरे होते हैं। मुझे महसूस होता है कि वह दिल की गहराईयों से अपना पैग़ाम देते हैं। आप हमेशा दुनिया की भलाई, आपसी एकता, न्याय और इन्सानी हुक़ूक़ की शिक्षा देते हैं। ख़लीफ़ा के शब्द चुम्बक जैसे हैं। बावजूद ज़बान ना समझने के मैं बड़े ग़ौर से उनका प्रत्येक शब्द सुनता हूँ।

ग्वेटामाला से एक नौ मबाइअ सुलेमान रो दरेग़ज़ (Soliman Rodrigez) साहिब बयान करते हैं: ख़लीफतुल मसीह का ग्वेटामाला आना हमारे लिए बड़ी ख़ुशक़िसमती का कारण है। हमारी जमाअत पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है कि ख़लीफ़ा वक़्त हमारी जमाअत में तशरीफ़ लाए। जब हमें यह पता चला कि हुज़ूर ग्वेटामाला तशरीफ़ ला रहे हैं तो हमारे अंदर ख़ुशी की कोई सीमा नहीं थी । मेरे अंदर एक रुहानी मज़बूती पैदा होने लग गई और इस में कोई शक नहीं कि अब मैंने अपने अंदर बहुत तबदीली महसूस की। मेरी हुज़ूर से दरख़ास्त है कि आप हमारी जमाअत को अपनी ख़ास दुआओं में याद रखें ।

ग्वेटामाला से एक नौ मबाइअ लीज़ा पनतो (Liza Pinto) साहिबा अपने विचार इस तरह बयान करती हैं: मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि ख़लीफतुल मसीह ग्वेटामाला तशरीफ़ लाए। मेरे लिए बहुत गर्व और इज़्ज़त की बात है और मेरे लिए एक महान तजुर्बा है और मेरा दिल-ख़ुशी से भर गया। और ख़लीफ़ा वक़्त के बरकतों वाले वजूद को देखकर ख़ुशी से मेरे आँसू निकल आए और मेरे ईमान को ताज़गी और दृढ़ता मिली।

ग्वेटामाला से दो डोमिंगो तीवल साहिब (Doming Tiul) बयान करते हैं: मेरा सम्बन्ध cabun जमाअत से है। हुज़ूर अनवर के आने पर मैंने अपने आपको ईमानी रुहानी लिहाज़ से बहुत जोश से भरा पाया। हुज़ूर अनवर के आने पर मैं बहुत ख़ुश हूँ। मुझे ख़लीफ़ा वक़्त के साथ वक़्त गुज़ारने का अवसर भी मिला मैं इस शख़्स से मिला जो ख़ुदा तआला के बहुत क़रीब है।

ग्वेटामाला की मारतीज़ा तीवल साहिबा (Martiza Tiul) अपने विचार को प्रकट करते हुए कहती हैं: हुज़ूर अनवर के इतने क़रीब रहने का पहले कभी अवसर नहीं मिला। पहले सिर्फ तस्वीरों में देखा था पहली बार इमाम वक़्त को अपने सामने देखने का अवसर मिला है इस पर मैं ख़ुदा तआला की शुक्रगुज़ार हूँ। हुज़ूर अनवर से बात करने का अवसर मेरी ज़िन्दगी का बेहतरीन अवसर था।

ग्वेटामाला से मीगील साहिब (Miguel Panzos) अपने विचार इन शब्दों में बयान करते हैं: हमारी ज़िन्दगी का बेहतरीन अवसर था कि हमने अपनी ज़िन्दगियों में पहली बार ख़लीफ़ा वक़्त को देखा। हस्पताल की स्थापना हमारे लिए एक नेअमत से कम नहीं पहले किसी भी मज़हब ने इन्सानियत के बारे में ऐसा नहीं सोचा था। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि ख़लीफ़ा वक़्त को अपने बीच पाया और इस बात की भी ख़ुशी है कि हमने अपने बीच विभिन्न देशों के अहमदी भाईयों को पाया। ख़ुदा तआला का शुक्र है कि ख़लीफ़ा वक़्त की वजह से हमारे अंदर एक रुहानी तबदीली पैदा हुई।

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 5 September 2019 Issue No. 36

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

आलीया तो रायदा साहिबा (Aliya Turaida) ने बयान किया: ख़लीफ़ा वक़्त को अपने सामने देखकर मैंने अपने अंदर एक ख़ुशी, एक गर्व महसूस किया। आज मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं अहमदी हूँ और इस वजह से इस्लाम की बेहतरीन शिक्षा लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करूँगी।

कलाओडया साहिबा (Claudia) ने अपने विचार का प्रकट इन शब्द में किया कि: मैं बहुत ख़ुश हूँ और अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ कि ख़लीफतुल मसीह को अपने इस देश में देखा। मैं अल्लाह तआला से दुआ करती हूँ कि यह मुलाक़ात मेरे और मेरे घर वालों के लिए बरकतों वाली साबित हो। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं अपनी भावनाओं को बयान कर सकूं। जब मैं सामूहिक मुलाक़ात में हुज़ूर के साथ बैठी हुई थी उस वक़्त मेरे ज़हन में आ रहा था कि मैं हुज़ूर से बहुत बातें करूँगी लेकिन मेरी भावनाएं इन सब पर हावी हो गई और मैं कुछ ना कह सकी। मेरी दरख़ास्त है कि हुज़ूर मेरे और मेरी फ़ैमिली के लिए दुआ करें और मेरी शादी को 10 साल हो चुके हैं और मेरी औलाद नहीं अल्लाह तआला मुझे औलाद की नेअमत से नवाज़े।

जमाअत चयापस (Chiapas)मैक्सीको से ख़दीजा गोमज़ साहिबा अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि ख़लीफतुल मसीह से मिलने का अवसर मिला और हमारे सवालों के जवाब मिले। मेरी मुहब्बत इस्लाम की तरफ़ बढ़ी है। बैअत करने से मेरा ईमान नए सिरे से जिन्दा हुआ है। मैं प्यारे हुज़ूर से दुआ की दरख़ास्त करती हूँ कि मेरी और पूरी जमाअत चयापस के ईमान और इर्फ़ान में इज़ाफ़ा हो।

सरिया गोमज़ साहिबा ने बयान किया कि: मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि मुझे ख़लीफतुल मसीह को इस अवसर पर देखने का अवसर मिला। इस से पहले में हुज़ूर की तक़रीरें सुनती थी लेकिन हुज़ूर को देखना यह एक ऐसा तजुर्बा है कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि इस को कैसे बयान करूँ। यह मेरे ऐसे भावनाएं हैं जो मेरे दिल की गहराईयों से निकल रही हैं। मैं सामूहिक मुलाक़ात में मौजूद थी। हुज़ूर से मुलाक़ात ने मुझे एक बहुत बड़ा सबक़ दिया है जो मैं अपने साथ लेकर जाऊँगी।

यासमीन गोमज़ साहिबा अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं कि: मुलाक़ात में मौजूद होना एक बहुत ही ख़ूबसूरत याद है क्योंकि मेरे लिए हुज़ूर अनवर को क़रीब से देखने का यह पहला अवसर था। और मेरी भावनाएं ऐसी थी कि मुझे ख़ुशी से रोना आ रहा था। हुज़ूर ने जो भी बयान क्या इस से मुझे अपनी जिन्दगी में बेहतरी लाने का अवसर मिलेगा।

मैक्सीको के एक नई बैअत करने वाले अहमदी Jesus Vallejo Segura साहिब ने कहा : जमाअत अहमदिया का परिचय और जमाअत से सम्बन्ध बनाना एक बहुत बड़ा इनाम है। मेरी यह ख़ुशक़िसमती है कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआएं सुनीं। मैं अंधेरे में था अल्लाह तआला ख़ुद मुझे और मेरी फ़ैमिली को रोशनी की तरफ़ लेकर आया और मुझे अपनी जिन्दगी में तबदीली का अवसर मिला। मैं हुज़ूर का ग्वेटामाला के दौरा का शुक्रिया अदा करता हूँ और अधिक यह कि आपने मेरे सवाल का जो इबादत के बारे में था बड़ा तसल्ली बख़्श जवाब दिया।

लाइला लतीफ़ा बिंत आदरणीय इमाम इब्राहीम साहिब अपनी भावनाएं इस तरह बयान करती हैं: मेरा सम्बन्ध Chiapas जमाअत से है। ख़लीफ़ा वक़्त से मिल कर बहुत ख़ुशी हुई। हम पहले हुज़ूर को फ़ोटो या टीवी में देखते थे और यह अल्लाह तआला का हम पर बहुत बड़ा इनाम है कि इस ने हमें हुज़ूर से मुलाक़ात का शरफ़ प्रदान फ़रमाया और हुज़ूर की बातें सुनने का अवसर दिया। मुझे हुज़ूर से मिलकर इतनी ख़ुशी हुई कि मैं बयान नहीं कर सकती और मैं हुज़ूर से सिर्फ़ यह दुआ की दरख़ास्त करना चाहती हूँ कि अल्लाह तआला हमें वास्तविक अहमदियों में शामिल फ़रमाए।

पानामा से Heliodoro Almanzo साहिब अपनी पत्नी और बेटी के साथ हुज़ूर अनवर की मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ लाए। महोदय ने विचार बयान करते हुए कहा : हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात मेरी जिन्दगी का ख़ुशियों से भरपूर दिन था जिसे मैं शब्द में बयान नहीं कर सकता। हुज़ूर अनवर के नूरानी चेहरा को देखकर मैंने एक अजीब रुहानी कशिश अपने अंदर महसूस की। मेरा दिल हुज़ूर अनवर की मुहब्बत से भर गया। मैंने कभी सोचा भी ना था कि इस पवित्र वजूद के क़दमों में बैठने और हाथ मिलाने का मुझे सौभाग्य नसीब होगी। ख़ाकसार हुज़ूर अनवर का शुक्रिया भी अदा करता है कि ख़ाकसार समय 5 साल से सख़्त बीमार था और हुज़ूर अनवर की दुआ के नतीजे में अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और मुझे पूर्ण सेहत प्रदान फ़रमाई। हुज़ूर अनवर की मुहब्बत और रुहानी कशिश जो मेरे दिल में है इस पर मैं ख़ुदा का शुक्र अदा करता हूँ।

हैदर ख़ाइरो साहिब जो कि देश कोस्टारिका से ख़लीफतुल मसीह के दर्शन के लिए आए थे बयान करते हैं: ख़ुदा के ख़लीफ़ा को ग्वेटामाला में देखकर बेपनाह ख़ुशी और मुसर्रत महसूस की। दिल को हद दर्जा सुकून तथा इतमीनान नसीब हुआ। हुज़ूर की इस्लाम को फैलाने की तड़प महसूस कर के मैंने भी अह्द किया है कि इस्लाम का मुहब्बत भरा पैग़ाम फैलाने के लिए हद दर्जा कोशिश करूँगा। ताकि दुनिया इस्लाम की अमनवाली शिक्षाओं से आगाह हो और इस्लाम को क़बूल करे। निसन्देह हुज़ूर अमन के पैग़ंबर हैं। मानव सेवा के लिए नासिर हस्पताल की स्थापना पर हम अल्लाह तआला और हुज़ूर अनवर के शुक्रगुज़ार हैं।

बेलीज़ से आने वाला वफ़द 16 घंटे का लम्बा सफ़र तय करके पहुंचा था। लजना की एक मैंबर गोलूडा मार्टीना साहिबा अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: मेरे और मेरी फ़ैमिली के लिए यह एक निहायत दिलनशीन और बरकतों वाला अवसर था। मैं बहुत भावनात्मक हो गई थी मैं हुज़ूर अनवर को बेलीज़ के विभिन्न समस्याओं के बारे में बताना चाहती थी। निसन्देह यह एक बहुत अच्छा सफ़र था। हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई। दुआ है कि अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर की सहायता तथा मदद फ़रमाता रहे हुज़ूर अनवर सीधे मार्ग पर हमारी राहनुमाई करते हुए हमें अल्लाह की तरफ़ ले जाएं। यह मुलाक़ात सदैव के लिए मुझे याद रहेगी क्योंकि मुझे यक़ीन है कि मुझे और मेरे बच्चों को इस बरकत से हिस्सा मिला है।

लजना की एक मैंबर ख़दीजा हसन साहिबा ने बयान किया: हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात ने मुझे रूहानियत में बहुत बढ़ाया है। मैंने हुज़ूर अनवर को टीवी पर इंटरव्यू देते हुए, सियासतदानों से गुफ़्तगु फ़रमाते हुए, विभिन्न देशों की लजना, ख़ुद्दाम, वाक़फ़ीन के साथ कक्षाओं लेते हुए देखा है। मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली महसूस करती हूँ कि ज़ाती तौर पर हुज़ूर अनवर की मज्लिस में शामिल हुई और आज सवाल करने का अवसर मिला। मैं बहुत ख़ुशनसीब हूँ।

लजना की एक मैंबर नीकोल अवीलीज़ (Nicole Avilez) साहिबा अपने विचार बयान करती हैं: मेरा यह सफ़र बहुत अच्छा था और एक बहुत अच्छा तजुर्बा था। दुनिया-भर के विभिन्न देशों के लोगों से मिलने का अवसर मिला और सब ने मुझे अपनी फ़ैमिली की तरह प्यार किया। हमारे वफ़द के सारे लोगों के साथ सारे लोग बहुत इज्ज़त के साथ पेश आए। मैंने एक आपसी मुहब्बत महसूस की। जब मैंने हुज़ूर अनवर को देखा और जब हुज़ूर अनवर ने मेरे साथ गुफ़्तगु फ़रमाई तो मैं बहुत ज़्यादा नर्वस हो गई थी। जब हुज़ूर अनवर ने मुझे यूके जलसा पर आने की दावत दी तो मैं बहुत ज़्यादा भावनात्मक हो गई थी, मेरा जिस्म काँपने लगा था क्योंकि मेरी बहुत इच्छा थी कि यू के जाकर हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात कर सकूं। अब इन्शा अल्लाह मुझे यूके जाने का अवसर मिलेगा। ख़ुदा तआला ने मेरी यह इच्छा पूरी की। यह बरकतों वाली मुलाक़ात हमेशा याद रहेगी।

लजना की एक मैंबर फ़्लोर नटीना पेरेज़ (Florentina Perez) साहिबा ने बयान किया : मुझे लगा कि यह अवसर कभी भी नसीब नहीं होगा। ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात मेरे लिए बहुत ख़ुशनसीबी थी। इस की याद मेरे साथ मरते दम तक रहेगी। हुज़ूर अनवर के साथ नमाज़ें पढ़ने का बहुत आन्नद आया और दिल को सन्तोष भी पहुंचा। जब हुज़ूर अनवर कमरे में दाख़िल हुए तो ऐसा महसूस हुआ कि अब सब कुछ ठीक हो जाएगा और सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। मुलाक़ात के दौरान तो मुझे कुछ कहने का अवसर ना मिला लेकिन मुझे उम्मीद है कि भविष्य में मैं उनसे दुबारा मिल सकूँगी ताकि उनसे कुछ कह सकूं।

(शेष......................)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad